हरिभूमि
हिसार-हांसी भूमि
रोहतक, रविवार 8 मार्च 2026

11 विद्युत तंत्र में लाइनमैनों की अहम भूमिका : रविंद्र

12 ओएसजीयू में धूमधाम से मनाया महिला दिवस

खबर संक्षेप

खांडा खेड़ी गांव में खेल प्रतियोगिता आज

नारनौंद। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च को खांडा खेड़ी गांव के खेल स्टेडियम में खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। एसडीएम विकास यादव ने बताया कि यह खेल प्रतियोगिता राजीव गांधी खेल परिसर, खांडा खेड़ी में किया जाएगा। यह आयोजन खेलो इंडिया कार्यक्रम के तहत किया जा रहा है। इस अवसर पर महिलाओं और बालिकाओं के लिए विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। इसमें 13 वर्ष से कम, 13 से 18 वर्ष तथा 18 वर्ष से अधिक आयु वर्ग की महिलाओं के लिए 100 मीटर, 200 मीटर तथा 400 मीटर दौड़ प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी।

महिला पर हमला करने का आरोपी गिरफ्तार

हिसार। सदर पुलिस ने चंदन नगर पुलिया के पास महिला पर हमला करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान चंदन नगर निवासी राजेश के रूप में हुई है। जांच अधिकारी एसआई दलेर सिंह ने बताया कि इस बारे में मंगाली निवासी एवं चंदन नगर के संजय नगर में रह रही महिला कृष्णा पत्नी बलराज ने शिकायत दर्ज करवाई थी। शिकायत के अनुसार 23 फरवरी को रात करीब 9 बजे वह अपने खेत की तरफ जा रही थी। रास्ते में खाल की पुली पर आरोपी राजेश रास्ते में गंदगी डाल रहा था। मना करने पर आरोपी ने रास्ता रोककर डंडे से उसके सिर पर वार कर दिया, जिससे वह घायल हो गई।

जागरूकता अभियान कल एचएयू में

हिसार। आयकर विभाग द्वारा आयकर अधिनियम 2025 के प्रावधानों के संबंध में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से 9 मार्च को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कॉलेज ऑफ़ एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी में विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। यह कार्यक्रम आयकर अधिकारी (छूट), रोहतक द्वारा आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम के हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्य अतिथि होंगे, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में आयकर की संयुक्त आयुक्त डॉ. पूनम सिंह शिरकत करेंगे। वक्ता के तौर पर परमजीत सिंह सीए व विकास गर्ग सीए उपस्थित होंगे।

निगम ने स्वच्छता नियमों के उल्लंघन पर किए चालान

हिसार। शहर को स्वच्छ बनाए रखने के उद्देश्य से नगर निगम द्वारा निरंतर कदम उठाए जा रहे हैं। इसी कड़ी में नगर निगम की टीमों ने खुले में कचरा डालने और स्वच्छता नियमों की अवहेलना करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए चालान किए। एएसआई सन्नी ने नगर निगम द्वारा विद्युत नगर की दीवार के साथ खत्म किए गए सेकेंडरी पॉइंट पर कचरा डालने पर एक व्यक्ति का एक हजार रुपये का चालान किया। वहीं एएसआई प्रवीण ने डाबड़ा चौक पूल के नीचे सीएमसी हॉस्पिटल के सामने खुले में कचरा डालने पर दो के चालान काटे।

21 बेसहारा पशुओं को भेजा गो-अभ्यारण

हिसार। नगर निगम द्वारा बेसहारा पशुओं को पकड़ने का अभियान लगातार जारी है। इस अभियान के सहायक नोडल अधिकारी सुरेन्द्र वर्मा की देखरेख में नगर निगम की टीम ने शनिवार को विभिन्न क्षेत्रों में कार्रवाई की। एएसआई संदीप बिश्नोई ने बताया कि नगर निगम की टीम ने सेक्टर 27-28, सैनियान मोहल्ला, जलेबी चौक, पड़ाव चौक, मिल गेट के आस-पास के क्षेत्र से 21 बेसहारा पशुओं को पकड़ा। पकड़े गए सभी पशुओं को गौ-अभ्यारण भेज दिया गया है। नगर निगम की टीम के साथ पुलिस विभाग की टीम भी मौजूद रही।

मृतक के तीन दोस्तों पर लगाया हत्या का आरोप, साक्ष्य जुटाए

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

शहर के घोड़ा फार्म रोड स्थित विद्या नगर निवासी लगभग 21 वर्षीय साहिल की हत्या करके उसका शव रेल पटरी के पास फेंकने का मामला सामने आया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में सामने आया है कि मृतक के सिर पर तेजधार हथियार के तीन घाव व एक हाथ टूटा हुआ है। परिजनों ने पहले ही हत्या की आशंका जताते हुए जांच की मांग की थी, वहीं पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मामला साफ हो गया। हत्या का आरोप मृतक के तीन दोस्तों पर लगा है। शव के पास से साहिल का मोबाइल फोन और बाइक की चाबी गायब मिली। उधर, रेलवे पुलिस, शहर थाना पुलिस और सीन ऑफ क्राइम की टीम ने वारदात स्थल से साक्ष्य जुटाए।

विद्या नगर के युवक की हत्या करके शव रेल पटरी के पास फेंका पुलिस जांच में फोन और बाइक की चाबी मिली गायब

प्रिंटिंग प्रेस में काम करता था विद्या नगर निवासी साहिल, नई बाइक लेकर निकला था घर से

विद्या नगर निवासी राजकुमार ने बताया कि उसका भाई साहिल प्रोफेसर कालोनी स्थित एक प्रिंटिंग प्रेस में काम करता था। दो दिन की छुट्टी थी तो वह घर पर ही था। शुक्रवार शाम लगभग छह बजे वह नई बाइक लेकर घर से निकला था। घर से जाने से पहले उसने मां प्रेम रानी को कहा था कि वह जल्दी वापस लौट आएगा। उसके बाद साढ़े नौ बजे के आसपास फोन पर बात की तो उसने जल्द आने की बात कही लेकिन उसके बाद फोन बंद आया। साढ़े दस बजे के आसपास दो युवक एक दुकान पर आए और उन्होंने बताया कि साहिल लहूलुहान हालत में घोड़ा फार्म रोड पर एक गैस एजेंसी के गोदाम के सामने रेलवे पटरी के पास पड़ा है। सूचना के बाद परिजन मौके पर पहुंचे और देखा तो भाई साहिल की सांसे थम चुकी थी। उसके सिर से खून बह रहा था। उसका फोन और बाइक की चाबी गायब थी। उन्होंने पुलिस को सूचना दी तो पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और साहिल को नागरिक अस्पताल के आपातकालीन कक्ष में लेकर गई। जहां चिकित्सकों ने जांच के बाद साहिल को मृत घोषित कर दिया।

नागरिक अस्पताल में पहुंची पुलिस।

जांच जारी

रेलवे थाना प्रभारी राधेश्याम ने बताया कि साहिल की मौत मामले में हर पहलू से जांच की जा रही है। पोस्टमार्टम के बाद विसरा जांच के लिए लैब में भेजा गया है। वहां से रिपोर्ट आने के बाद मौत के सही कारणों का पता चल पाएगा।

शराब पी रहे थे

परिजनों के अनुसार रात को जब वे वारदात स्थल के पास पहुंचे तो वहां पर दो किशोर खड़े थे। उन्होंने बताया कि साहिल और उसके तीन दोस्त एक खंडर कमरे में बैठ कर शराब पी रहे थे। जब उनके पास गए तो एक बार पानी की बोतल मंगवाई। साथ वाली दुकान से पानी की बोतल लाकर दी। कुछ देर के बाद साहिल के साथ शराब पीने वाले उसके साथ मारपीट कर रहे थे। फिर मारपीट करने वाले उसे उठा कर रेलवे पटरी की तरफ ले गए और वहां पर फेंक कर मौके से भाग गए।

सिविल सर्जन कार्यालय के बाहर पुलिस के खिलाफ लगाए नारे

सरकारी डॉक्टर्स की हड़ताल, ओपीडी सेवाएं रहीं प्रभावित, मरीज हुए परेशान

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

करनाल के घरौंडा में डॉक्टर के साथ पुलिस अधिकारी द्वारा मारपीट व दुर्व्यवहार करने के मामले ने तूल पकड़ लिया है। पुलिस अधिकारी की हरकत से नाराज हरियाणा सिविल मेडिकल सर्विस एसोसिएशन के आह्वान पर शनिवार को सरकारी डॉक्टर्स हड़ताल पर चले गए। डॉक्टर्स के हड़ताल पर चले जाने के कारण नागरिक अस्पताल में उपचार के लिए पहुंचे सैकड़ों मरीजों को परेशानी उठानी पड़ी। अस्पताल में ओपीडी सेवाएं पूरी तरह से प्रभावित रही।

घरौंडा में डॉक्टर के साथ पुलिस अधिकारी के मारपीट करने का मामला

डॉक्टर्स की ओपीडी कक्ष के बाहर डॉक्टर्स की हड़ताल का नोटिस चस्पा किया गया था। नागरिक अस्पताल में केवल एमरजेंसी सेवाएं तथा पोस्टमार्टम संबंधी कार्रवाई को छोड़कर डॉक्टर्स से जुड़े अन्य सभी कार्य प्रभावित रहे। दिनभर मरीज डॉक्टर्स की ओपीडी के बाहर हड़ताल खत्म होने का इंतजार करते रहे। फार्मासिस्ट भी चिकित्सकों के समर्थन में हड़ताल पर रहे। ऐसे में न मरीज का उपचार हुआ और न ही मरीजों को दवा मिल सकी। उधर, एसोसिएशन ने चेतावनी दी कि मामले से जुड़े आरोपितों को गिरफ्तार नहीं किया तो बैठक कर आपातकालीन सेवाएं बंद किया जा सकता है।

हिसार। सिविल सर्जन कार्यालय के बाहर प्रदर्शन करते हरियाणा सिविल मेडिकल सर्विसेज एसोसिएशन से जुड़े डॉक्टर्स। *फोटो: हरिभूमि*

हिसार। ओपीडी कक्ष के बाहर चिकित्सकों को इंतजार करते मरीज।

बुखार और खांसी की दवा लेने आया था

झुंपा से नागरिक अस्पताल आए ओमप्रकाश ने बताया कि वह सुबह बुखार और खांसी की दवा लेने के लिए अस्पताल आया था। यहां आने पर अस्पताल में कर्मचारी ने बताया कि फिजिशियन हड़ताल पर है। आज डॉक्टर्स ओपीडी में मरीजों की जांच नहीं करेंगे। हड़ताल के कारण उसका पूरा दिन खराब गया और ऊपर से आर्थिक हानि भी हुई।

घुटने दिखाने आया था

सीसवाला से आए मरीज धर्मपाल ने बताया कि उसे घुटने में तकलीफ है और वह घुटने दिखाने के लिए नागरिक अस्पताल में आया था। यहां आने पर पता चला कि डॉक्टर हड़ताल पर है। ऐसे में उन्हें परेशानी उठानी पड़ी है। मोटरसाइकिल पर सीसवाला से हिसार एक तरफ का 20 किलोमीटर पड़ता है। ऐसे में उसे समय और आर्थिक दोनों तरह का नुकसान भी उठाना पड़ा है।

सीएमओ कार्यालय के बाहर प्रदर्शन

डॉक्टर्स शनिवार सुबह सीएमओ कार्यालय के बाहर एकत्रित हुए और घरौंडा के डॉ. प्रशांत के साथ थाना प्रभारी द्वारा मारपीट व दुर्व्यवहार के खिलाफ प्रदर्शन किया। एसोसिएशन के जिला प्रधान डॉ. मनीष पूनिया बताया कि जब ऑन ड्यूटी पर एक डॉक्टर के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है तो आम आदमी के साथ कैसा व्यवहार करते होंगे, इसका अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है। सरकारी चिकित्सकों ने पुलिस के उच्चाधिकारियों से मांग की है कि ऐसे पुलिस कर्मचारियों पर कड़ी कार्रवाई कर पुलिस की छवि सुधारने का काम करें।

थाना प्रभारी पर तुरंत कानूनी कार्रवाई हो: डॉ. कौशिक

नागरिक अस्पताल के वरिष्ठ हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. सुरेश कौशिक ने घटना की निंदा करते हुए कहा कि घरौंडा में डॉ. प्रशांत के साथ थाना प्रभारी ने जिस तरीका का अमानवीय व्यवहार किया है, वह किसी भी सूरत में बर्दाश्त करने लायक नहीं है। इस मामले में थाना प्रभारी पर तुरंत कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जानी चाहिए। एक तरफ डीजीपी साहब कहते हैं कि पुलिस जनता के साथ विनम्रता तो पेश आए, क्या यहीं पुलिस की विनम्रता है। ऐसे व्यक्ति कानून के रखवाले नहीं हो सकते।

पुलिस ने हिस्ट्रीशीटर मोहित उर्फ बच्ची को होटल से दबोचा

- आरोपी को आज किया जाएगा अदालत में पेश
- आरोपी पर हैं आधा दर्जन आपराधिक मामले दर्ज

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

शहर की 12 क्वार्टर चौकी पुलिस ने हिस्ट्रीशीटर मंगाली सुरतिया निवासी मोहित उर्फ़ बच्ची को गिरफ्तार किया है। पुलिस पूछताछ में सामने आया है कि आरोपी पर आधा दर्जन आपराधिक घटनाओं को अंजाम देने बारे विभिन्न थानों में केस दर्ज है। इनमें लड़ाई झगड़ा, एनडीपीएस एक्ट, बैटरी चोरी, डीजल चोरी, सार्वजनिक स्थान पर गली गलौच करने के मामले प्रमुख हैं। उसे रविवार को अदालत में पेश किया जाएगा। 12 क्वार्टर चौकी इंचार्ज एएसआई राकेश ने बताया कि थाना मिलगेट क्षेत्र में बाबा विश्वकर्मा मार्केट के पास स्थित परमवीर एचपी पेट्रोल पंप से डीजल, गाड़ियों की वायरिंग व बैटरियां चोरी होने के संबंध में एक शिकायत मिली थी।

शिकायत में बताया गया कि 18 व 19 दिसंबर 2024 को पेट्रोल पंप से लगभग 1700–1800 लीटर डीजल चोरी हुआ तथा इससे पहले दो गाड़ियों की वायरिंग भी चोरी हुई थी, जिसकी कीमत लगभग दो लाख रुपये बताई गई है। इसके अलावा 21 दिसंबर 2024 को गाड़ियों की बैटरियां चोरी होने की घटना भी सामने आई थी।

घटना की सूचना मिलने पर पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की। शिकायत में एक बोलेरो गाड़ी व उसके चालक के बारे में भी संदेह जताया गया। पुलिस ने इस बारे चोरी का केस दर्ज करके जांच शुरू की गई।

हिसार। पकड़ा गया हिस्ट्रीशीटर मोहित उर्फ बच्ची। *फोटो: हरिभूमि*

कुल 4 आरोपी थे

उन्होंने बताया कि पुलिस ने पिछले एक साल से कड़ी मशकत व संभावित ठिकानों पर दबिश देते हुए मंगाली सुरतिया निवासी मोहित उर्फ़ बच्ची को मुखबरी के आधार पर शनिवार को 12 क्वार्टर क्षेत्र के एक होटल से गिरफ्तार किया। पूछताछ के दौरान उसने बताया कि वह तीन-चार महीने से यहां पर अपना होटल करके रह रहा था। पुलिस के अनुसार इस मामले में कुल चार आरोपी थे और चोरी की घटना को अंजाम देने के लिए बोलेरो गाड़ी का इस्तेमाल किया गया था। मामले में दो आरोपियों मंगाली सुरतिया निवासी महाबीर व महिला शालिनी उर्फ शालू को पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया था, जो फिलहाल जेल में है जबकि एक आरोपी अभी भी पुलिस की गिरफ्त से बाहर है। इस मामले में इस्तेमाल बोलेरो को बरामद करने व अन्य एक आरोपी को पकड़ने के लिए पुलिस जांच जारी है।

हांसी। नशीले पदार्थ गांजा के साथ पकड़ा गया आरोपी तथा मामले की जानकारी देते डीएसपी रविन्द्र सांगवान।

10 किलो से अधिक गांजा के साथ एक काबू, मामला दर्ज

- नशे बेचने के लिए ड्रेन पुल के पास खड़ा था आरोपी

हरिभूमि न्यूज ⏭हांसी

विशेष अभियान के तहत हांसी सीआईए पुलिस ने 10 किलो 44 ग्राम गांजा के साथ एक आरोपी को काबू किया है। गांजा के साथ पकड़े गए आरोपी की पहचान भिवानी जिले के गांव रोहनात निवासी अशोक कुमार उर्फ होक्का के रूप में हुई है। डीएसपी क्राइम रविंद्र सांगवान ने बताया कि सीआईए पुलिस की एक टीम गश्त व जांच पड़ताल के दौरान पुट्ठी मंगल खां बस अड्डा पर मौजूद थी। इस दौरान टीम को सूचना मिली थी कि रोहनात निवासी अशोक कुमार उर्फ होक्का एक पोलिथीन बैग नशीला पदार्थ बेचने की फिराक में पुट्टी मंगल खां–रोहनात रोड़ स्थित ड्रेन पुल के पास खड़ा है। सूचना के आधार पुलिस टीम तुरंत बताए गए स्थान पर पहुंची वहां एक युवक अपने हाथ में प्लास्टिक का बैग लिए खड़ा दिखाई दिया, जो पुलिस टीम को देखकर तेज-तेज कदमों से खेतों की ओर जाने लगा। लेकिन पुलिस ने तुरंत घेराबंदी कर उसे काबू कर लिया। और उसके हाथ में लिए 10 किलो 44 ग्राम बैग को खोल कर उसकी नियमानुसार तलाशी ली गई तो 10 किलो 44 ग्राम नशीला पदार्थ गांजा बरामद हुआ। पुलिस ने बरामद नशीले पदार्थ को कब्जे में लेकर आरोपी के खिलाफ थाना सदर हांसी में एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर कोर्ट में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

तीन केस दर्ज

डीएसपी रविन्द्र सांगवान ने बताया कि पकड़े गए आरोपी पर एनडीपीएस एक्ट के तीन मामले दर्ज हैं और एक मामले में उसे 10 साल की सजा हो चुकी है तथा तीन महीने पहले जमानत पर बाहर आया था और जेल से बाहर आते ही पुनः नशीले पदार्थों का कारोबार करने लगा।

कोल्हू चोरी करने के दो आरोपी किए गिरफ्तार

- आरोपी को एक दिन के पुलिस रिमांड पर लिया

हरिभूमि न्यूज ⏭हांसी

सदर थाना पुलिस ने गन्ने का जूस निकालने वाले कोल्हू को चोरी करने वाले दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की पहचान कंवारी गांव निवासी पवन व पवन प्रेम के रूप में हुई है। एएसआई कप्तान सिंह ने बताया कि गांव कंवारी निवासी राजेश कुमार ने 5 मार्च को सदर थाना हांसी में कोल्हू चोरी होने की शिकायत दी थी कि उसने सुल्तानपुर कंवारी रोड़ से धमाना रोड़ के बीच गन्ने का जूस निकालने वाला कोल्हू लगाया हुआ था और चोर उसके कोल्हू से इंजन, शाफ्ट पुली तथा जूस डालने का टैंक चोरी करके ले गए।

थाना सदर में अज्ञात के खिलाफ चोरी का मामला दर्ज कर दोनों आरोपियों गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश कर एक दिन का पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

लोहारी राघो में फिर मनरेगा घोटाला

- जांच में सामने आई मजदूरों व मिस्त्रियों की फर्जी हाजिरी
- फर्जीवाड़ा पकड़ में आने पर मेट को हटाया

हरिभूमि न्यूज ⏭नारनौंद

क्षेत्र के गांव लोहारी राघो में मनरेगा घोटाला एक बार फिर सुर्खियों में है। इस वर्ष 24 जनवरी से 8 फरवरी तक किए गए मनरेगा कार्य में दूसरे गांव माजरा के मजदूरों व मिस्त्रियों की फर्जी हाजिरी लगाने के मामले में पंचायत विभाग ने कड़ा एक्शन लिया है। प्राथमिक जांच में मजदूरों की उपस्थिति में भारी गड़बड़ी पाए जाने के बाद मेट संदीप कांत को तीन माह के लिए हटा दिया गया है। साथ ही गांव में मनरेगा काम पर भी ब्रेक लगा दिया गया है। एबीपीओ नरेंद्र घोड़ेला ने बताया कि प्राथमिक जांच में मेट पर लगाए गए आरोप सही पाए गए। शिकायतकर्ताओं ने जो साक्ष्य उपलब्ध करवाए थे, उनके आधार पर साइट पर काम के दौरान मिस्त्री-मजदूरों की हाजिरी में कई गड़बड़ियां व फर्जीवाड़ा पाया गया। हालांकि समय पर मामला पकड़ में आने के चलते गलतियों को दुरुस्त कर लिया गया।

यह है पूरा मामला

इस वर्ष 24 जनवरी से 8 फरवरी तक गांव में मनरेगा के तहत कार्य करवाया गया। आरोप है कि इस कार्य में मेट संदीप ने गांव लोहारी राघो के मजदूर व मिस्त्रियों को छोड़कर माजरा गांव के मजदूर व मिस्त्रियों को काम पर लगाया। आरोप है कि इस काम में गांव के जिन मजदूर-मिस्त्रियों की हाजिरी लगाई जा रही थी, वह पूरी तरह से फर्जी थी, क्योंकि कई मजदूर सुबह साइट पर हाजिरी लगाकर दिन में अपने काम पर चले जाते थे या गांव में ताश खेलते थे। कई दिनों में तो हाजिरी 6 मजदूरों की लगाई गई, जबकि सुबह की हाजिरी के वक्त फोटो में 5 मजदूर तो शाम के वक्त फोटो में 4 मजदूर ही दिखाए गए।

महिला आयोग को भेजी शिकायत, डिप्टी डीईओ की अध्यक्षता में कमेटी करेगी जांच

छात्राओं को मुर्गा बनाकर घुमाने के मामले में शिक्षा विभाग में हड़कंप, जांच कमेटी गठित

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

जिले के एक राजकीय हाई स्कूल में छात्राओं को मुर्गा बनाकर घुमाने के मामले की जांच के लिए जिला शिक्षा अधिकारी ने कमेटी गठित की है। डिप्टी डीईओ की अध्यक्षता में गठित कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर आगामी कार्रवाई की जाएगी। हाल ही में इस संबंध में तीन वीडियो सामने आए थे। वीडियो के अनुसार एक राजकीय हाई स्कूल में छात्राओं को सजा के तौर पर मुर्गा बनाकर घुमाया गया। मामले में वीडियो के साथ जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को ईमेल के जरिए शिकायत भेजी गई है। मामले की गंभीरता को देखते हुए डीईओ ने डिप्टी डीईओ की अध्यक्षता में जांच कमेटी गठित कर दी है। कमेटी को तीन दिन के भीतर जांच कर रिपोर्ट डीईओ कार्यालय को सौंपने के निर्देश दिए गए हैं। आरोप लगाया गया है कि स्कूल में छात्राओं को अनुशासन के नाम पर सजा दी गई और उन्हें मुर्गा बनाकर घुमाया गया। वायरल वीडियो में भी छात्राओं को इसी स्थिति में देखा जा रहा है। राज्य महिला आयोग को भी मामले की शिकायत भेजी गई है। शिक्षा विभाग का कहना है कि जांच रिपोर्ट आने के बाद ही स्पष्ट होगा कि वीडियो में दिख रही घटना कब और कैसे हुई और इसके लिए जिम्मेदार कौन है।

वीडियो गांव के सरकारी हाई स्कूल का

बताया जा रहा है कि सुरक्षा कारणों से शिकायतकर्ता ने अपना नाम उजागर नहीं किया है। शिकायतकर्ता ने लिखा है कि वीडियो गांव के सरकारी हाई स्कूल का है। यह ना तो फर्जी है और ना ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से बनाया गया है। वीडियो में छात्राओं को मुर्गा बनाकर घुमाया जा रहा है। लड़कियों को मुर्गा बनाना समानता और सम्मान के खिलाफ है। यह स्कूल के माहौल के लिए उचित नहीं है। फिलहाल घटना सामने आने के बाद शिक्षा विभाग में हड़कंप की स्थिति बनी हुई है।

30 से पहले समझ लें पैसे का खेल, वरना बाद में होगी मुश्किल !

कम उम्र में अपनाएं ये नियम, बनें आर्थिक रूप से मजबूत, निवेश की सही समय पर शुरुआत ही बनाती है अमीर

बिजनेस डेस्क

कम उम्र सपनों, करियर और नई शुरुआत का समय होती है। पहली नौकरी, पहली सैलरी और अपने फैसले लेने की आजादी — ये सब उत्साह से भरे होते हैं। लेकिन इसी दौर में पैसों को लेकर की गई छोटी-छोटी गलतियां आगे चलकर बड़ा वित्तीय बोझ बन सकती हैं। अक्सर युवा कमाई शुरू करते ही लाइफस्टाइल अपग्रेड कर लेते हैं, लेकिन बचत और निवेश को टालते रहते हैं। नतीजा यह होता है कि 30 की उम्र पार करते-करते जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं, मगर मजबूत फाइनेंशियल बेस नहीं बन पाता। अगर आप 30 की उम्र से पहले कुछ बुनियादी और असरदार वित्तीय नियम समझ लें, तो भविष्य आर्थिक रूप से सुरक्षित और तनावमुक्त बनाया जा सकता है। आइए जानते हैं ऐसे 5 जरूरी फाइनेंस रूल्स, जिन्हें हर युवा को अपनाना चाहिए।

1. 50/30/20 रूलः कमाई का सही बंटवारा

यह नियम बजट बनाने का सबसे आसान और कारगर तरीका माना जाता है। इसके अनुसार 50% आय जरूरी खर्चों पर (किराया, राशन, बिजली-पानी, बिल, ईएमआई), 30% आय इच्छाओं पर (घूमना-फिरना, मूवी, शॉपिंग, गैजेट्स) और 20% आय बचत या निवेश में लगानी चाहिए। अगर शुरुआत से ही इस फॉर्मूले को अपनाया जाए, तो खर्च नियंत्रण में रहता है और निवेश की आदत भी बनती है। कई युवा पूरी सैलरी खर्च कर देते हैं और महीने के अंत में बचत शून्य रह जाती है। 50/30/20 रूल आपको अनुशासन सिखाता है और "पहले बचत, फिर खर्च" की सोच विकसित करता है।

2. 20/4/10 कार रूलः गाड़ी का सपना

नई कार खरीदना लगभग हर युवा का सपना होता है। लेकिन कार लोन अक्सर लंबे समय तक वित्तीय दबाव बना देता है। ऐसे में 20/4/10 रूल बहुत काम आता है। कम से कम 20% डाउन पेमेंट करें, लोन की अवधि 4 साल से ज्यादा न रखें। आपकी मासिक आय का 10% से ज्यादा ईएमआई और कार खर्च पर न जाएं। इस नियम का मकसद यह है कि गाड़ी आपके लिए सुविधा बने, बोझ नहीं। लंबी अवधि का लोन लेने से ब्याज ज्यादा चुकाना पड़ता है और अन्य निवेश के अवसर छूट सकते हैं।

3. रूल ऑफ 72: कंपाउंडिंग की ताकत समझें

निवेश की दुनिया में "कंपाउंडिंग" सबसे बड़ा हथियार है। रूल ऑफ 72 आपको यह समझने में मदद करता है कि आपका पैसा कितने समय में दोगुना होगा। फॉर्मूला है: 72 ÷ ब्याज दर = पैसा डबल होने का समय (सालों में)।
उदाहरण के लिए, अगर आपको 12% सालाना रिटर्न मिल रहा है तो 72 ÷ 12 = 6 साल यानी आपका निवेश लगभग 6 साल में दोगुना हो सकता है। यह नियम आपको जल्दी निवेश शुरू करने की प्रेरणा देता है। जितनी जल्दी शुरुआत करेंगे, कंपाउंडिंग का फायदा उतना ज्यादा मिलेगा।

4. 3–6 महीने का इमरजेंसी फंड : सुरक्षा कवच

जिंदगी अनिश्चितताओं से भरी है। अचानक नौकरी छूट जाए, मेडिकल इमरजेंसी आ जाए या कोई पारिवारिक संकट आ जाए। ऐसे समय में कर्ज लेने की नौबत न आए, इसके लिए इमरजेंसी फंड जरूरी है। आपको कम से कम 3 से 6 महीने के खर्च के बराबर रकम अलग से बचाकर रखनी चाहिए। यह रकम सेविंग अकाउंट या लिक्विड फंड जैसे सुरक्षित और आसानी से निकाले जा सकने वाले साधनों में होनी चाहिए। इमरजेंसी फंड आपको मानसिक शांति देता है और निवेश को बीच में तोड़ने से बचाता है।

5. रूल ऑफ 100: उम्र के अनुसार निवेश

निवेश में रिस्क और रिटर्न का संतुलन बेहद जरूरी है। रूल ऑफ 100 एक आसान फॉर्मूला देता है। 100 – आपकी उम्र = इक्विटी में निवेश का प्रतिशत। अगर आपकी उम्र 25 साल है। 100–25 = 75 यानी 75% निवेश शेयर बाजार या इक्विटी में और 25% सुरक्षित साधनों (FD, बॉन्ड आदि) में रखा जा सकता है। यह नियम युवाओं को ज्यादा जोखिम लेने की अनुमति देता है, क्योंकि उनके पास समय ज्यादा होता है और बाजार की गिरावट से उबरने का मौका भी।

क्यों जरूरी हैं ये फाइनेंस रूल्स?

- ये आपको खर्च और बचत का संतुलन सिखाते हैं
- कर्ज के जाल से बचाते हैं
- निवेश की आदत जल्दी डालते हैं
- भविष्य के बड़े लक्ष्यों (घर, शादी, रिटायरमेंट) के लिए तैयारी करवाते हैं
- आर्थिक तनाव कम करते हैं
- 30 की उम्र के बाद जिम्मेदारियां तेजी से बढ़ती हैं परिवार, बच्चों की पढ़ाई, घर का लोन, मेडिकल जरूरतें। अगर आपने 20s में मजबूत वित्तीय नींव रख ली, तो आगे का सफर आसान हो जाएगा।

आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर महिलाएं निवेश के फैसलों में बढ़ रही भागीदारी

अब 56% अब खुद ले रहीं फैसले फाइनेंशियल प्लानिंग में गैप

निवेश में महिलाओं का आत्मविश्वास और योजना बनाने में चुनौती बढ़ा

देश के 13 शहरों के 5,050 लोगों को शामिल किया गया, सर्वे में 25 से 60 वर्ष आयु वर्ग के ऐसे प्रतिभागियों को चुना गया

बिजनेस डेस्क

भारत में महिलाओं की आर्थिक भूमिका तेजी से बदल रही है। अब महिलाएं केवल कमाई तक सीमित नहीं हैं, बल्कि निवेश से जुड़े फैसलों में भी सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। शहरी भारत में निवेश को लेकर महिलाओं का आत्मविश्वास लगातार बढ़ रहा है और बड़ी संख्या में महिलाएं अब अपने निवेश निर्णय खुद लेने लगी हैं। हालांकि निवेश में बढ़ती भागीदारी के बावजूद मजबूत और व्यवस्थित वित्तीय योजना के मामले में अभी भी बड़ा अंतर बना हुआ है। यह तस्वीर रिपोर्ट में सामने आई है। जिसे यूजीओवी के साथ मिलकर तैयार किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक महिलाओं में निवेश के प्रति जागरूकता और स्वतंत्रता दोनों तेजी से बढ़ रही हैं, लेकिन वित्तीय लक्ष्य तय करने और दीर्घकालिक योजना बनाने में अभी भी सुधार की काफी गुंजाइश है। इस अध्ययन के लिए 2025 की चौथी तिमाही में देश के 13 शहरों के 5,050 लोगों को शामिल किया गया। सर्वे में 25 से 60 वर्ष आयु वर्ग के ऐसे प्रतिभागियों को चुना गया, जो अपने परिवार के निवेश संबंधी फैसलों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। अध्ययन में पुरुषों और महिलाओं की संख्या बराबर रखी गई और इसका फोकस मुख्य रूप से शहरी और अपेक्षाकृत उच्च सामाजिक-आर्थिक वर्ग के परिवारों पर रहा।

अब महिलाएं खुद ले रही निवेश के फैसले

रिपोर्ट की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि निवेश के फैसलों में महिलाओं की स्वतंत्र भागीदारी तेजी से बढ़ी है। सर्वे के मुताबिक अब 56 फीसदी महिलाएं निवेश से जुड़े फैसले खुद ले रही हैं, जबकि 2022 में यह आंकड़ा 44 फीसदी था। यानी तीन साल में इसमें 12 फीसदी की उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। वहीं, पुरुषों में यह आंकड़ा 68 फीसदी है, जो अब भी महिलाओं से अधिक है। लेकिन महिलाओं में तेजी से बढ़ती भागीदारी यह संकेत देती है कि आने वाले समय में यह अंतर और कम हो सकता है। रिपोर्ट यह भी बताती है कि निवेश के बारे में खुद सीखने वाली महिलाओं की संख्या भी बढ़ रही है। अब करीब 16 फीसदी महिला निवेशकों ने कहा कि उन्होंने निवेश की जानकारी स्वयं हासिल की है, जबकि 2022 में यह आंकड़ा 13 फीसदी था। इसके विपरीत संयुक्त रूप से निवेश निर्णय लेने वाली महिलाओं का हिस्सा 52 फीसदी से घटकर 43 फीसदी रह गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाएं अब आर्थिक मामलों में ज्यादा आत्मनिर्भर हो रही हैं।

मार्केट-लिंक्ड प्रोडक्ट्स में बढ़ी दिलचस्पी

महिलाएं अब पारंपरिक निवेश विकल्पों के साथ-साथ बाजार से जुड़े निवेश उत्पादों में भी सक्रिय हो रही हैं। सर्वे के मुताबिक करीब 51 फीसदी महिलाएं अब म्यूचुअल फंड और शेयरों में स्वतंत्र रूप से निवेश कर रही हैं, जबकि तीन साल पहले यह आंकड़ा 39 फीसदी था। यह बदलाव इस बात का संकेत है कि महिलाओं में जोखिम लेने की क्षमता और निवेश की समझ दोनों बढ़ रही हैं।

आत्मविश्वास ऊंचा, लेकिन फाइनेंशियल प्लानिंग कमजोर

रिपोर्ट का एक अहम निष्कर्ष यह भी है कि निवेशकों में आत्मविश्वास तो बढ़ा है, लेकिन व्यवस्थित वित्तीय योजना के मामले में अभी भी बड़ा अंतर बना हुआ है। सर्वे के मुताबिक 84 फीसदी लोगों को भरोसा है कि वे निवेश के फैसले खुद लेने में सक्षम हैं। लेकिन सिर्फ 33 फीसदी निवेशकों के पास ही स्पष्ट वित्तीय लक्ष्य और उन्हें हासिल करने की ठोस योजना मौजूद है।

यह भी जानें

- 32 फीसदी लोगों के पास योजना तो है, लेकिन कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं है।
- 29 फीसदी लोगों ने लक्ष्य तय किए हैं, लेकिन उन्हें हासिल करने की ठोस रणनीति नहीं है।
- 6 फीसदी के पास न लक्ष्य है और न ही कोई योजना।
- 25 से 34 वर्ष की युवा महिलाओं में ज्यादा दिखाई देता है। इस आयु वर्ग की कई महिलाएं निवेश की योजना तो बनाती हैं, लेकिन उनके लक्ष्य स्पष्ट नहीं होते।

पैसे के मायने भी बदल रहे

अध्ययन दिखाता है कि शहरी भारत में पैसे को लेकर लोगों की सोच तेजी से बदल रही है। पहले जहां पैसे को मुख्य रूप से जरूरत या जीविका से जोड़ा जाता था, वहीं इसे आजादी और बेहतर जीवनशैली से जोड़ा जाने लगा है। 2022 में जहां 27 फीसदी लोग पैसे को 'आजादी' से जोड़ते थे, वहीं अब यह आंकड़ा बढ़कर 35 फीसदी हो गया है। इसके विपरीत पैसे को केवल 'जरूरत' से जोड़ने वालों की संख्या घट गई है।

घर से ज्यादा अनुभवों पर खर्च

निवेश व्यवहार में एक दिलचस्प बदलाव यह भी देखने को मिला है कि लोग पारंपरिक संपत्तियों के बजाय अनुभवों को अधिक महत्व देने लगे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक 41 फीसदी महिलाएं घर खरीदने की बजाय यात्रा को प्राथमिकता दे रही हैं, जबकि पुरुषों में यह आंकड़ा 34 फीसदी है। 2025 में करीब 43 फीसदी लोगों ने अतिरिक्त पैसे का इस्तेमाल यात्रा पर किया, जबकि 2022 में यह हिस्सा 36 फीसदी था। वहीं, घर खरीदने को सबसे बड़ा सपना मानने वालों का प्रतिशत 36 फीसदी से घटकर 28 फीसदी रह गया है।

सलाहकारों पर भरोसा लेकिन उपयोग सीमित

- 39 फीसदी लोग वित्तीय जानकारी किसी अनजान व्यक्ति से साझा करने में असहज महसूस करते हैं।
- 35 फीसदी का मानना है कि उन्हें अन्य स्रोतों से ही पर्याप्त जानकारी मिल जाती है।
- 32 फीसदी किसी की सलाह मानने में सहज नहीं होते।
- निवेश के मामलों में परिवार और दोस्तों की भूमिका सबसे अहम बनी हुई है। 76 फीसदी निवेश संबंधी सलाह अपने सामाजिक दायरे से लेते हैं।
- निवेश से जुड़े फैसलों में सोशल मीडिया की भूमिका भी तेजी से बढ़ रही है।
- शेयर बाजार में निवेश करने वाली महिलाओं में 51 फीसदी सोशल मीडिया पर स्टॉक से जुड़े कंटेंट पर सक्रिय रूप से पोस्ट या टिप्पणी करती हैं, जबकि पुरुषों में यह आंकड़ा 36 फीसदी है।

पैसे को सही दिशा देना बेहद जरूरी

बिजनेस डेस्क। आज की अनिश्चित आर्थिक परिस्थितियों में केवल निवेश करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि मजबूत इमरजेंसी फंड बनाना भी उतना ही जरूरी है। नौकरी की अस्थिरता, अचानक मेडिकल खर्च, बिजनेस में मंदी या किसी पारिवारिक संकट जैसी स्थितियां बिना चेतावनी के सामने आ सकती हैं। ऐसे समय में इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन का सेफ्टी नेट बनता है। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है आखिर कितना इमरजेंसी फंड होना चाहिए? इसका जवाब हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है, क्योंकि यह आपकी आय, खर्च, पारिवारिक जिम्मेदारियों और नौकरी की स्थिरता पर निर्भर करता है।

क्या है इमरजेंसी फंड? : इमरजेंसी फंड वह राशि है जिसे आप केवल आपात स्थिति के लिए अलग रखते हैं। यह पैसा निवेश के लिए नहीं, बल्कि संकट के समय खर्च चलाने के लिए होता है। इसका उद्देश्य है कि किसी भी आकस्मिक स्थिति में आपको कर्ज न लेना पड़े या निवेश तोड़ना न पड़े।

तीन महीने का इमरजेंसी फंड : किनके लिए सही?

अगर आपः सैलरीड कर्मचारी हैं, अविवाहित हैं, ईएमआई या बड़ी वित्तीय जिम्मेदारियां नहीं हैं। आपकी नौकरी स्थिर और सुरक्षित है। तो आपके लिए 3 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड पर्याप्त हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आपका मासिक खर्च 40,000 है, तो कम से कम 1.2 लाख रुपये का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें किराया, राशन, बिजली-पानी, मोबाइल बिल, ट्रांसपोर्ट और बीमा प्रीमियम जैसे आवश्यक खर्च शामिल करें।

6 महीने का इमरजेंसी फंड : परिवार वालों के लिए जरूरी

यदि आप शादीशुदा हैं या आपके ऊपर परिवार की जिम्मेदारी है, तो जोखिम बढ़ जाता है। ऐसे में कम से कम 6 महीने के खर्च के बराबर फंड रखना समझदारी है। आपका मासिक खर्च 70,000 है, तो लगभग 4.2 लाख का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें शामिल करें: घर का किराया या ईएमआई, स्कूल फीस, राशन और घरेलू खर्च, बीमा प्रीमियम, मेडिकल खर्च, परिवार के साथ रहने पर अचानक खर्च बढ़ सकते हैं, इसलिए ज्यादा सुरक्षा जरूरी है।

9 से 12 महीने का इमरजेंसी फंड : अस्थिर आय वालों के लिए

अगर आप : फ्रीलांसर हैं, बिजनेस मालिक हैं, कमीशन आधारित आय पर निर्भर हैं, परिवार के अकेले कमाने वाले सदस्य हैं तो आपको 9 से 12 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड रखना चाहिए। अनियमित आय वाले लोगों पर आर्थिक मंदी या बाजार में गिरावट का असर ज्यादा होता है। उदाहरण के लिए, यदि आपका मासिक खर्च 60,000 है, तो 5.4 लाख रुपये से 7.2 लाख तक का फंड सुरक्षित माना जाएगा। लंबी अवधि तक वित्तीय स्थिरता देगा।

कितना कम या ज्यादा है सही? : बहुत कम इमरजेंसी फंड जोखिम भरा है, क्योंकि अचानक नौकरी जाने या बीमारी की स्थिति में आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। वहीं, जरूरत से ज्यादा पैसा केवल सेविंग अकाउंट में रखने से आपकी निवेश ग्रोथ धीमी हो सकती है, क्योंकि उस पर कम रिटर्न मिलता है। इसलिए संतुलन जरूरी है न बहुत कम, न बहुत ज्यादा।

इमरजेंसी फंड कहां रखें?

1. सेविंग अकाउंट
सबसे आसान और लिक्विड विकल्प। पैसा तुरंत निकाला जा सकता है। हालांकि ब्याज दर कम होती है।

2. शॉर्ट-टर्म फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी)
कम अवधि की एफडी में पैसा रखने से सेविंग अकाउंट से थोड़ा ज्यादा ब्याज मिलता है और जोखिम भी कम रहता है।

3. स्वीप-इन एफडी
एक बेहतर विकल्प है, जहां आपका पैसा सेविंग अकाउंट में रहता है और जरूरत से ज्यादा राशि स्वतः एफडी में चली जाती है। जरूरत पड़ने पर ऑटोमैटिक ब्रेक होकर पैसा उपलब्ध हो जाता है।

इमरजेंसी फंड कैसे बनाएं?

- हर महीने सैलरी का 10–20% अलग रखें।
- बोनस या अतिरिक्त आय का हिस्सा जोड़ें।
- खर्चों की समीक्षा कर गैर-जरूरी खर्च कम करें।
- लक्ष्य तय करें और ऑटोमैटिक ट्रांसफर सेट करें।

सैलरी और जरूरतों को समझें कितना इमरजेंसी फंड है जरूरी

तैयारी

बिजनेस डेस्क

आज की अनिश्चित आर्थिक परिस्थितियों में केवल निवेश करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि एक मजबूत इमरजेंसी फंड बनाना भी उतना ही जरूरी है। नौकरी की अस्थिरता, अचानक मेडिकल खर्च, बिजनेस में मंदी या किसी पारिवारिक संकट जैसी स्थितियां बिना चेतावनी के सामने आ सकती हैं। ऐसे समय में इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन का सेफ्टी नेट बनता है। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है आखिर कितना इमरजेंसी फंड होना चाहिए? इसका जवाब हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है, क्योंकि यह आपकी आय, खर्च, पारिवारिक जिम्मेदारियों और नौकरी की स्थिरता पर निर्भर करता है।

क्या है इमरजेंसी फंड?

इमरजेंसी फंड वह राशि है जिसे आप केवल आपात स्थिति के लिए अलग रखते हैं। यह पैसा निवेश के लिए नहीं, बल्कि संकट के समय खर्च चलाने के लिए होता है। इसका उद्देश्य है कि किसी भी आकस्मिक स्थिति में आपको कर्ज न लेना पड़े या निवेश तोड़ना न पड़े।

तीन महीने का इमरजेंसी फंड : किनके लिए सही?

- अगर आपः सैलरीड कर्मचारी हैं, अविवाहित हैं, ईएमआई या बड़ी वित्तीय जिम्मेदारियां नहीं हैं। आपकी नौकरी स्थिर और सुरक्षित है। तो आपके लिए 3 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड पर्याप्त हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आपका मासिक खर्च 40,000 है, तो कम से कम 1.2 लाख रुपये का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें किराया, राशन, बिजली-पानी, मोबाइल बिल, ट्रांसपोर्ट और बीमा प्रीमियम जैसे आवश्यक खर्च शामिल करें।

6 महीने का इमरजेंसी फंड परिवार वालों के लिए जरूरी

- यदि आप शादीशुदा हैं या आपके ऊपर परिवार की जिम्मेदारी है, तो जोखिम बढ़ जाता है। ऐसे में कम से कम 6 महीने के खर्च के बराबर फंड रखना समझदारी है। मान लीजिए आपका मासिक खर्च 70,000 है, तो लगभग 4.2 लाख का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें शामिल करें: घर का किराया या ईएमआई, बच्चों की स्कूल फीस, राशन और घरेलू खर्च, बीमा प्रीमियम, मेडिकल खर्च, परिवार के साथ रहने पर अचानक खर्च बढ़ सकते हैं, इसलिए ज्यादा सुरक्षा जरूरी है।

9 से 12 महीने का इमरजेंसी फंड अस्थिर आय वालों के लिए

- अगर आप : फ्रीलांसर हैं, बिजनेस मालिक हैं, कमीशन आधारित आय पर निर्भर हैं, परिवार के अकेले कमाने वाले सदस्य हैं
- तो आपको 9 से 12 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड रखना चाहिए। अनियमित आय वाले लोगों पर आर्थिक मंदी या बाजार में गिरावट का असर ज्यादा होता है। उदाहरण के लिए, यदि आपका मासिक खर्च 60,000 है, तो 5.4 लाख रुपये से 7.2 लाख तक का फंड सुरक्षित माना जाएगा। यह आपको लंबी अवधि तक वित्तीय स्थिरता देगा।

कितना कम या ज्यादा है सही?

- बहुत कम इमरजेंसी फंड जोखिम भरा है, क्योंकि अचानक नौकरी जाने या बीमारी की स्थिति में आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। वहीं, जरूरत से ज्यादा पैसा केवल सेविंग अकाउंट में रखने से आपकी निवेश ग्रोथ धीमी हो सकती है, क्योंकि उस पर कम रिटर्न मिलता है। इसलिए संतुलन जरूरी है न बहुत कम, न बहुत ज्यादा।

इमरजेंसी फंड कहां रखें?

1. सेविंग अकाउंट
सबसे आसान और लिक्विड विकल्प। पैसा तुरंत निकाला जा सकता है। हालांकि ब्याज दर कम होती है।
2. शॉर्ट-टर्म फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी)
कम अवधि की एफडी में पैसा रखने से सेविंग अकाउंट से थोड़ा ज्यादा ब्याज मिलता है और जोखिम भी कम रहता है।
3. स्वीप-इन एफडी
यह एक बेहतर विकल्प है, जहां आपका पैसा सेविंग अकाउंट में रहता है और जरूरत से ज्यादा राशि स्वतः एफडी में चली जाती है। जरूरत पड़ने पर ऑटोमैटिक ब्रेक होकर पैसा उपलब्ध हो जाता है। ध्यान रखें, इमरजेंसी फंड को शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड या लंबी अवधि के निवेश साधनों में न रखें, क्योंकि बाजार गिरावट के समय आपको नुकसान में पैसा निकालना पड़ सकता है।

इमरजेंसी फंड कैसे बनाएं?

- हर महीने सैलरी का 10–20% अलग रखें
- बोनस या अतिरिक्त आय का हिस्सा जोड़ें
- खर्चों की समीक्षा कर गैर-जरूरी खर्च कम करें

लक्ष्य तय करें व ऑटोमैटिक ट्रांसफर सेट करें

- धीरे-धीरे 6–12 महीनों में आपका फंड तैयार हो सकता है।

जीवन की पहली सुरक्षा परत

- इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन की पहली सुरक्षा परत है। निवेश से पहले इसे प्राथमिकता देना चाहिए। आपकी सैलरी, नौकरी की स्थिरता और पारिवारिक जिम्मेदारियां तय करती हैं कि आपको 3, 6 या 12 महीने का फंड रखना चाहिए।
- सही योजना के साथ बनाया गया इमरजेंसी फंड आपको मानसिक शांति देता है और किसी भी आर्थिक संकट में मजबूती से खड़ा रखता है। याद रखें सुरक्षा पहले, निवेश बाद में।

समय जितना ज्यादा कंपाउंडिंग का असर उतना बड़ा होगा

अगर आदत जल्दी बनती है तो जोखिम भी रहता है सीमित

सिर्फ 1000 रुपये की एसआईपी से करोड़पति बन सकती है जेन जेड, रिटायरमेंट तक तैयार हो सकता है बड़ा फंड

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

आज की युवा पीढ़ी यानी जेन जेड कमाई के साथ-साथ निवेश को लेकर भी पहले से ज्यादा जागरूक हो रही है। 1997 से 2012 के बीच जन्मी यह पीढ़ी टेक्नोलॉजी-फ्रेंडली है और डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए निवेश करना पसंद करती है, लेकिन बड़ा सवाल यह है क्या सच में सिर्फ 1000 रुपये की एसआईपी से करोड़पति बना जा सकता है? जवाब है हां, अगर शुरुआत जल्दी हो और निवेश लंबी अवधि तक जारी रहे।

क्या है एसआईपी और क्यों खास?

एसआईपी यानी सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान। यह तरीका आपको हर महीने एक तय राशि निवेश करने की सुविधा देता है। एसआईपी के जरिए निवेश मुख्य रूप से म्यूचुअल फंड में किया जाता है, जिसका प्रदर्शन शेयर बाजार पर निर्भर करता है। एसआईपी की सबसे बड़ी ताकत है कंपाउंडिंग-यानी आपके निवेश पर मिलने वाला रिटर्न भी आगे रिटर्न कमाता है। यही चक्र समय के साथ बड़े फंड में बदल जाता है। मान लीजिए आपकी उम्र 20 साल है और आप हर महीने 1000 रुपये की एसआईपी शुरू करते हैं। आप यह निवेश 60 साल की उम्र तक यानी 40 साल तक जारी रखते हैं। यदि सालाना 12% अनुमानित रिटर्न मिले।

टॉप 5 फंड्स का 5 साल का एनुअल रिटर्न 19 से 20% तक रहा

इसे ऐसे समझें

- कुल निवेशः 1000×12 महीने × 40 साल = 4.8 लाख रुपये
- अनुमानित फंड : लगभग 97.93 लाख रुपये यानी सिर्फ 4.8 लाख रुपये निवेश करके आप करीब 98 लाख रुपये का फंड बना सकते हैं।
- यदि सालाना 15% अनुमानित रिटर्न मिले
- कुल निवेश : 4.8 लाख रुपये
- अनुमानित फंड : लगभग 2.30 करोड़ रुपये
- यहां साफ दिखता है कि रिटर्न में सिर्फ 3% का अंतर भी लंबे समय में कितना बड़ा बदलाव ला सकता है। यही है कंपाउंडिंग की असली ताकत।

जल्दी शुरुआत क्यों है जरूरी?

अगर आप 20 की उम्र में शुरुआत करते हैं तो आपके पास 40 साल का समय है। लेकिन यदि यही निवेश 30 की उम्र से शुरू करते हैं, तो आपके पास केवल 30 साल बचेंगे और फंड का आकार काफी छोटा हो जाएगा। समय जितना ज्यादा, कंपाउंडिंग का असर उतना बड़ा।

बाजार जोखिम समझना जरूरी

- एसआईपी पूरी तरह शेयर बाजार से जुड़ी होती है। ऐसे में जरूरी बातें समझना जरूरी है।
- रिटर्न कभी भी फिक्स नहीं होता।
- बाजार में तेजी होगी तो ज्यादा रिटर्न मिलेगा।
- गिरावट के समय पोर्टफोलियो में अस्थायी नुकसान हो सकता है।
- लंबी अवधि में जोखिम कम हो जाता है।
- इतिहास बताता है कि लंबी अवधि में इक्विटी बाजार ने बेहतर रिटर्न दिया है, लेकिन धैर्य बनाए रखना जरूरी है।

टैक्स का भी रखें ध्यान

एसआईपी से मिलने वाला मुनाफा पूरी तरह टैक्स-फ्री नहीं होता। इक्विटी फंड में एक साल से ज्यादा निवेश रखने पर लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन्स टैक्स लागू होता है (निर्धारित सीमा से ऊपर के लाभ पर)। इसलिए रिटायरमेंट प्लानिंग करते समय टैक्स की गणना भी शामिल करें।

खास सलाह

- लंबा निवेश समय
- डिजिटल प्लेटफॉर्म तक आसान पहुंच
- रिस्क लेने की क्षमता
- अगर आप अभी से 1000 रुपये की एसआईपी शुरू करते हैं और हर साल अपनी आय बढ़ने पर एसआईपी की रकम भी बढ़ाते हैं (स्टेप अप एसआईपी), तो फंड का आकार कई गुना हो सकता है।

निवेश शुरू करने से पहले रखें इन बातों का ध्यान

- इमरजेंसी फंड जरूर बनाएं
- हेल्थ और टर्म इंश्योरेंस लें।
- अपनी जोखिम क्षमता के अनुसार फंड चुनें।
- निवेश लंबी अवधि के लिए रखें, बीच में बंद न करें।
- बाजार गिरने पर घबराकर एसआईपी बंद न करें।

क्या 1000 रुपये काफी

शुरुआत के लिए 1000 रुपये बिल्कुल पर्याप्त है। असली बात रकम नहीं, अनुशासन और निरंतरता है। समय के साथ आप एसआईपी बढ़ा सकते हैं। छोटी रकम से शुरुआत करने का फायदा यह है कि आदत जल्दी बनती है और जोखिम सीमित रहता है। जेन जेड के लिए यह सुनहरा मौका है। 20 की उम्र में शुरू की गई 1000 रुपये की एसआईपी 60 की उम्र तक करोड़ों का फंड बना सकती है। बशर्ते निवेश लंबी अवधि तक जारी रहे और अनुशासन बना रहे। याद रखिए, अमीर बनने के लिए बड़ी सैलरी नहीं, बल्कि जल्दी शुरुआत, धैर्य और कंपाउंडिंग की समझ जरूरी है। अगर आज कदम उठाएंगे, तो रिटायरमेंट के समय आपके पास भारी-भरकम फंड हो सकता है। अब सवाल यह है कि आप अपनी पहली एसआईपी कब शुरू कर रहे हैं?

तेरे चरणों में सांवरिया सिल्वर जुबली हो गई...भजन पर झूमे श्रद्धालु

आदमपुर में केक काटकर मनाया 25वां श्रीश्याम फाल्गुन महोत्सव

हरिभूमि न्यूज ⏭ आदमपुर

क्लाथ मार्केट स्थित नवरात्र महोत्सव मैदान में श्रीश्याम मित्र मंडल एवं श्री खाटू श्याम सालासर बालाजी सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 25वें श्रीश्याम फाल्गुन महोत्सव में श्रद्धालु देर रात तक तेरे चरणों में सांवरिया सिल्वर जुबली हो गई... जैसे गीतों के भक्ति रस में झूमते रहे। खाटू श्याम निज मंदिर के पुजारी श्याम सिंह चौहान के सान्निध्य में हुए जागरण का शुभारंभ जिला ब्राह्मण सभा के अध्यक्ष रतनलाल शर्मा ने ज्योत प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर समाजसेवी घीसाराम जैन, प्रदीप बैनीवाल, प्रेम बंसल, राजकुमार बंसल, श्याम बंसल, मोतीलाल तथा निरंजन बंसल विशेष रूप से उपस्थित रहे। जागरण में कोलकाता से नितेश शर्मा, बरेली से अपर्णा मिश्रा व अनंत मिश्रा, दिल्ली से मा. राघव, भारत सिंह तथा सूफी चिंकू सहित अनेक कलाकारों ने बाबा श्याम की महिमा का गुणगान करते हुए भजनों की ऐसी प्रस्तुति दी कि श्रद्धालु झूम उठे। मंच संचालन प्रकाश खन्ना ने किया।

ये रहे मौजूद

आयोजक समिति के अध्यक्ष सुरेंद्र गर्ग, अमित गोयल, नरेश गोयल, हेमंत कुमार, मुकेश गोयल और दीपक गोयल ने अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट कर उनका स्वागत एवं धन्यवाद किया। जागरण में बाबा श्याम का भव्य दरबार, अलौकिक श्रृंगार, पावन ज्योत, इत्र व पुष्प वर्षा, छप्पन भोग और खिचड़े का प्रसाद श्रद्धालुओं के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। इस मौके पर जिला पार्षद वीर सिंह राड़, सतबीर जिंदल, व्यापार मंडल उपप्रधान संदीप गोयल, जगत अग्रवाल, कुलदीप बैनीवाल, संकित-अंकित बंसल, राजू लंबू, पवन गर्ग, नरेंद्र जैन, आत्माराम, आकाश सेठी, वरुण गर्ग, रोशन अग्रवाल, सतीश बंसल, संतोष कुमार, ज्ञान सारंगपुरिया, बजरंग शर्मा आदि मौजूद रहे।

आदमपुर। भजन गाती बरेली से अपर्णा मिश्रा व श्रीश्याम फाल्गुन महोत्सव में उपस्थित श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

बगैर लाइनमैन के बिजली व्यवस्था सुचारू रख पाना मुश्किल: लोरा

लाइनमैन दिवस पर बिजली कर्मियों के समर्पण को सलाम

बालसमंद सब डिविजन में धूमधाम से मनाया अंतरराष्ट्रीय लाइनमैन दिवस

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

बालसमंद सब डिविजन में शनिवार को अंतरराष्ट्रीय लाइनमैन दिवस मनाया गया। इस मौके पर मुख्य रूप से एसडीओ धर्मवीर तथा 33केवी आर्य नगर इंचार्ज प्रदीप लोरा विशेष रूप से उपस्थित रहे। लोरा ने कहा कि आज लाइनमैन दिवस मनाया जा रहा है। जो बहुत ही सहरानीय कदम है इससे कर्मचारियों में उत्साह व आत्मसम्मान की भावना मजबूत होती है। लाइनमैन बिजली व्यवस्था की रीढ़ है। बगैर लाइनमैन के बिजली व्यवस्था सुचारू रख पाना मुश्किल ही नही नामुमकिन है। चाहे भीषण गर्मी में 40 डिग्री तापमान में पोल पर चढ़कर काम करना हो या शीतकाल में कड़कड़ाती सर्दी में काम करना हो या फिर तेज आंधी, तूफान व मूसलाधार बारिश में बिजली सुधार कार्य सम्पादित करना हो। लाइनमैन न थकता है, न रुकता है सतत चलता ही रहता है। एसडीओ धर्मवीर ने कहा कि लाइनमैन हमेशा तत्पर रहता है जब लोग कोविड के चलते घरों में कैद थे हमने तब लोगों के मनोरंजन के लिए इस भयंकर वायरस से लड़ते हुए निर्बाध बिजली सेवा दी है। इस मौके पर जेई योगेश, विकास झाझडिया, सुभाष लोरा, राजेश लाइनमैन, शुभम सचदेवा, भूपेंद्र रेड्डु, पवन फोरमैन, अशोक, रमेश फोरमैन, सुनील मंगाली, विकास लाइनमैन, नरेश शर्मा, साधुराम, अनिल शर्मा, सोमबीर आदि कर्मचारी उपस्थित रहे।

हिसार। लाइनमैन दिवस पर उपस्थित एसडीओ धर्मवीर, इंचार्ज प्रदीप लोरा व अन्य। फोटो : हरिभूमि

विद्युत तंत्र में लाइनमैनों की अहम भूमिका : रविंद्र

- एसडीओ मंदीप कुंडू ने लाइनमैनों को सुरक्षा उपकरण देकर सम्मानित किया

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम के एसडीओ ऑपरेशन सेक्टर 1 और 4 और सिटी सब डिविजन कार्यालय हिसार में अंतरराष्ट्रीय लाइनमैन दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर ऑपरेशन डिविजन नंबर वन कार्यकारी अभियंता रविंद्र कालीरावण ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। इस मौके पर कार्यकारी अभियंता व एसडीओ मंदीप कुंडू ने लाइनमैनों को सुरक्षा उपकरण देकर सम्मानित किया।

कार्यकारी अभियंता रविंद्र कालीरावण ने इस अवसर पर बिजली कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज का दिन उन सभी बिजली कर्मचारियों के सम्मान का दिन है जो निस्वार्थ भाव से कार्य करते हुए पूरे शहर को ऊर्जा से आलोकित करते हैं। निर्बाध बिजली आपूर्ति केवल सुविधा ही नहीं बल्कि विकास की आधारशिला बन गई है। इस विशाल विद्युत तंत्र को सुचारू बनाए रखने में लाइनमैन की सबसे अहम भूमिका है। इसलिए हमें बिजली निगम के सुरक्षा निर्देशों का पूर्ण पालन करते हुए अत्यंत सतर्कता व अनुशासन के साथ कार्य करना चाहिए।

कार्यक्रम में जेई देवेंद्र सिंह, जेई सोहन सिंह, सुरेंद्र फौजी, अनिल वर्मा, ओमप्रकाश सभ्रवाल सहित कई अन्य कर्मचारियों ने अपने अनुभव और कार्य करने की प्रणाली व सुरक्षा के संबंध में अपने विचार रखे।

हिसार। अंतरराष्ट्रीय लाइनमैन दिवस पर सम्मानित किए गए लाइनमैन। फोटो : हरिभूमि

भगवान वेंकटेश जी के रथ को हाथों से खींचकर श्रद्धालुओं ने जताई आस्था

- तिरुपति धाम में धूमधाम से निकली भगवान वेंकटेश जी की सवारी शोभा यात्रा

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

अध्यात्म व सामाजिक सरोकारों के पोषक श्री तिरुपति बालाजी धाम में सुसज्जित रथ पर भगवान वेंकटेश जी की सवारी शोभा यात्रा निकाली गई। विद्वान अर्चकों ने पूरे विधि विधान एवं मंत्रोच्चारण के साथ भगवान वेंकटेश जी के साथ माता लक्ष्मी व माता भूदेवी के विग्रह को रथ पर स्थापित पालकी में विराजमान किया और फिर पूजा-अर्चना के साथ सवारी शोभा यात्रा धूमधाम से निकली। सवारी व शोभा यात्रा के दौरान श्रद्धालु जय श्रीमन्ननारायण, जय गोविंदा व जय भगवान वेंकटेश के जयघोष करते रहे। भक्तों ने अपने हाथों से रथ को खींचकर अपनी आस्था जताई। इसके उपरांत श्रद्धालुओं में प्रसाद का वितरण किया गया।

सवारी शोभा यात्रा में हिस्सा लेने वाले श्रद्धालुओं ने धाम में स्थापित श्री वेंकटेश भगवान जी, श्री पद्मावती माता जी, श्री गोदांबा माता जी, श्री गरुड़ जी, श्री लक्ष्मी नृसिंह जी, श्री सुदर्शन जी, श्री रामानुज स्वामी जी, श्री शठकोप स्वामी जी, श्री वरवर मुनि जी एवं श्री हनुमान जी के मंदिर में दर्शन किए। श्रद्धालुओं ने धाम में स्थापित 42 फुट ऊंचे सोने के श्री गरुड़ स्तंभ, बलिपीठम्, घंटाघर, श्री तिरुपति यज्ञशाला एवं पवित्र सरोवर पुष्करणी का भी अवलोकन किया और 71 फुट ऊंचे भव्य व नक्काशीदार गोपुरम के दर्शन किए।

हिसार। तिरुपति धाम में भगवान वेंकटेश जी की सवारी शोभा यात्रा में हिस्सा लेते अर्चक। फोटो : हरिभूमि

अगम मार्ग धाम बनभौरी में सत्संग और भंडारे में पहुंचे हजारों श्रद्धालु

बरवाला। गांव बनभौरी में आयोजित सत्संग व भंडारे में उपस्थित श्रद्धालुगण

हरिभूमि न्यूज ⏭ बरवाला

मुक्ति के दाता संत रामप्रकाश महाराज की तीसरी पुण्यतिथि पर अगम मार्ग धाम बनभौरी में ऐतिहासिक सत्संग व भंडारे का आयोजन किया गया। इस सत्संग व भंडारे का आयोजन संत अमर प्रकाश महाराज के द्वारा किया गया।

इस सत्संग व भंडारे में दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, जम्मू कश्मीर, उतर प्रदेश व उत्तराखंड से हजारों की संख्या में श्रद्धालु अगम मार्ग धाम बनभौरी दरबार में पहुंचे व सभी भगतो ने श्रद्धा के सुमन अर्पित किए। महाराज संत अमर प्रकाश महाराज ने बड़े ही सुशोभित भजनों व शब्दों से सभी महापुरुषों का गुणगान किया। इस दौरान गुरु रविदास सभा के प्रधान राजकुमार रंगा, महासचिव सुनील भानखोड, कोषाध्यक्ष विरेन्द्र बरवाला, दया राम, विक्रम रंगा, प्रेम छाछिया आदि मौजूद रहे।

विद्यार्थियों का ओलंपियाड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन

हिसार। बीडी मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में इंटरनेशनल स्तर पर आयोजित गणित व अंग्रेजी विषय की ओलंपियाड परीक्षा में विद्यार्थियों ने स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक जीतकर विद्यालय का नाम रोशन किया है। परीक्षा में विद्यालय की चौथी कक्षा की भाविका प्रथम, कशिश द्वितीय व मानव तृतीय स्थान पर रहा। कक्षा पांचवी से गर्वित प्रथम, ख्वाहिश द्वितीय व आयुष तीसरे स्थान पर, कक्षा छठी से दक्ष गोदारा प्रथम, दीपांशु द्वितीय व सिरत तृतीय स्थान पर, कक्षा सातवीं से वंशिका प्रथम, कुसुम द्वितीय व बकुल तृतीय स्थान पर रहे। कक्षा आठवीं से चैतन्य प्रथम, दिव्या द्वितीय व राघव तृतीय स्थान पर, कक्षा नौवीं से कमल प्रथम, भावेश द्वितीय व गौरव तृतीय स्थान पर, कक्षा दसवीं से दीपाली प्रथम, मोहित द्वितीय व विशाल तृतीय स्थान पर रहे।

मोटे अनाज को लेकर किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौंद

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नारनौंद के आगनवाड़ी केन्द्र में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष नीलम जांगड़ा ने की। कार्यक्रम में मुख्य रूप से आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने शिरकत की, जिन्हें महिला सशक्तिकरण और समाज सेवा के क्षेत्र में उनके बहुमूल्य योगदान के लिए सम्मानित किया गया। भाजपा जिला महिला मोर्चा की अध्यक्ष नीलम जांगड़ा ने बताया कि कार्यक्रम का मुख्य विषय मिलेट्स और पोषण था। इस वर्ष के मुख्य केंद्र बिंदु मिलेट्स यानी मोटे अनाज को बढ़ावा देना रहा। कार्यक्रम के दौरान संबोधित करते हुए कहा कि हमें स्वस्थ रहने के लिए खाने में मोटे अनाज का भी प्रयोग करना चाहिए। जिसमें ज्वार, बाजरा, रागी इत्यादि अनाजों को शामिल कर सकते हैं।

- अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

नारनौंद। कार्यक्रम में मौजूद आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ भाजपा महिला जिला अध्यक्ष नीलम जांगड़ा।

महिलाएं समाज की मजबूत नींव: नितिन

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में एडीआर केंद्र में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी (सीजेएम) ने की। इस अवसर पर महिलाओं के अधिकारों, उनके सशक्तिकरण तथा समाज के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर विस्तृत रूप से चर्चा की गई। कार्यक्रम में बतौर प्रशिक्षक लीगल एड डिफेंस काउंसिल के नितिन मेहता उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने कहा कि महिला समाज की आधी आबादी होने के साथ-साथ परिवार और समाज की मजबूत नींव भी हैं। महिलाओं को शिक्षा, समान अवसर और न्यायिक संरक्षण प्रदान करना समय की आवश्यकता है, ताकि वे आत्मनिर्भर बनकर समाज के विकास में और अधिक सक्रिय भूमिका निभा सकें। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए महिलाओं को उनके कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूक रहने का आह्वान किया।

बिजली निगम के प्रांगण में मनाया लाइनमैन दिवस

बरवाला। बिजली निगम के प्रांगण में लाइनमैन दिवस मनाया गया। जिसमें उपमंडल अधिकारी दिनेश कुमार वर्मा द्वारा बिजली की लाइनों पर काम करने से संबंधित दुर्घटनाओं से बचने के लिए कर्मचारियों को दिशानिर्देश दिए गए। उन्होंने कहा कि बिजली आज के दिन प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक अनिवार्य साधन बन चुकी है। जिसके बिना हमारा जीवन इस युग में असंभव बन जाता है। बिजली निगम में लाइनमैन का कार्य एक जोखिम भरा होता है। जो कि हर समय मौत के मुंह में रहकर कार्य करता है। इस अवसर पर सुरेंद्र सिंह जेई, शमशेर जेई, पवन शर्मा जेई, सुरेश फोरमैन, रामकिशन फोरमैन व रिटायर्ड कर्मचारी सुभाष सोनी व दयानंद जांगड़ा समेत बरवाला उपमंडल के अनेक कर्मचारी मौजूद रहे।

होली चाइल्ड स्कूल के विद्यार्थियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन

हिसार। होली चाइल्ड सीनियर सेकेंडरी स्कूल के विद्यार्थियों ने एक बार फिर अपनी मेहनत, लगन और शैक्षणिक उत्कृष्टता का शानदार प्रदर्शन करते हुए सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। चयनित विद्यार्थियों में राशि, कृष्ण, हार्दिक, हर्षित, नव्या, दिव्यांश और दलिश शामिल हैं। इन विद्यार्थियों की सफलता विद्यालय के लिए गर्व का विषय है। सभी विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह और आत्मविश्वास के साथ परीक्षा में भाग लिया तथा अपने उज्ज्वल भविष्य की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया। इस सफलता के पीछे विद्यालय के अनुभवी शिक्षकों अनिल, पारुल आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा जिन्होंने विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के लिए विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया।

मत्स्य क्षेत्र में कौशल विकास एवं करियर उन्नति पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

तकनीकी ज्ञान और आत्मविश्वास विकसित करें प्रतिभागी

मत्स्य क्षेत्र को खाद्य सुरक्षा, रोजगार सृजन और सतत आजीविका के लिए महत्वपूर्ण

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कॉलेज ऑफ फिशरीज साइंस की ओर से एससी/एसटी छात्रों के लिए 'मत्स्य क्षेत्र में कौशल विकास एवं करियर उन्नति' विषय पर एक सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। यह कार्यक्रम छात्र कल्याण निदेशालय के करियर एवं काउंसलिंग प्लेसमेंट सेल के सहयोग से आयोजित किया गया है। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को कौशल संवर्धन के माध्यम से सशक्त बनाना तथा मत्स्य पालन और एक्वा कल्चर क्षेत्र में बेहतर करियर के अवसर उपलब्ध कराना है। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर छात्र कल्याण निदेशालय के निदेशक डॉ. रमेश कुमार यादव मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देते हैं तथा एससी/एसटी समुदाय के छात्रों को व्यावसायिक कौशल प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने मत्स्य क्षेत्र की बढ़ती संभावनाओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह क्षेत्र खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, रोजगार सृजन करने और सतत आजीविका को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण सत्रों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करते हुए तकनीकी ज्ञान, व्यावहारिक कौशल और आत्मविश्वास विकसित करने पर जोर दिया।

हिसार। कार्यक्रम को संबोधित करते मुख्य अतिथि डॉ. रमेश यादव।

मत्स्य प्रशिक्षण कार्यक्रम में विशेषज्ञ रहे मौजूद

कार्यक्रम का आयोजन मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा, ऑफिसर इंचार्ज डॉ. रचना गुप्ता और विभागाध्यक्ष डॉ. दलीप कुमार बिश्नोई की उपस्थिति में किया गया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. मंजू रानी और डॉ. कविता शर्मा द्वारा किया जा रहा है, जो पूरे सप्ताह प्रशिक्षण सत्रों के संचालन की देखरेख करेंगी। डॉ. कविता शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया जबकि मंच संचालन छात्रा ईशा द्वारा किया गया। इस अवसर पर एडीएसडब्ल्यू डॉ. संदीप धवन, डॉ. सुबोध अग्रवाल सहित शिक्षक, कर्मचारी व प्रतिभागी उपस्थित रहे।

आदमपुर में 19 स्टार अध्यापक हुए सम्मानित

आदमपुर। खंड शिक्षा अधिकारी आदमपुर कार्यालय में उत्कृष्ट अध्यापन कार्य के लिए 16 शिक्षकों स्टार अध्यापक के सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सभी अध्यापकों ने अपनी बेस्ट प्रेक्टिस के अनुभव साझा किए। सभी स्टार अद्यापकों ने जीवंत उदाहरण देकर अद्यापन के पवित्र कार्य को अच्छे से करने बारे अपनी रणनीतियां भी साझा की। खंड शिक्षा अधिकारी उमेद सिंह मिल ने सभी स्टार अध्यापकों को सम्मानित किया। इस अवसर पर हंसराज खिचड ने आगामी शेक्षणिक स्तर में नामाकन बढ़ाने के लिए रणनीति साझा की।

महंगाई ने जनता का जीना किया मुश्किल : राजेश

हिसार। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य राजेश संदलाना ने रसोई गैस की कीमतों में हुई बढ़ोतरी और बढ़ती महंगाई को लेकर केंद्र की भाजपा सरकार की आलोचना की है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार के कार्यकाल में महंगाई लगातार बढ़ती जा रही है और इसका सीधा असर आम जनता की जेब पर पड़ रहा है। राजेश संदलाना ने कहा कि घरेलू रसोई गैस सिलेंडर और व्यावसायिक एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में हालिया बढ़ोतरी से गरीब, मजदूर और मध्यम वर्ग के लोगों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ा है।

सूचना

मैं, ईश्वर सिंह पुत्र श्री देवीचन्द, निवासी मकान नं. 443/16, निकट राईजिंग सन पब्लिक स्कूल, न्यू महावीर कालोनी, हिसार, तहसील व जिला हिसार बयान करता हूं कि मेरा लड़का सुनील कुमार व उसकी पत्नी सुमन मेरे व मेरे परिवार के कहने व सुनने से बाहर हैं। इसलिये मैं अपने लड़के सुनील व उसकी पत्नी सुमन को अपनी तमाम चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल करता हूं। भविष्य में जो भी कोई इनके साथ किसी प्रकार का लेन-देन/व्यवहार करेगा उसका वह खुद जिम्मेवार होगा। मेरी व मेरे परिवार की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा पत्रकारवार्ता में बोले

कांग्रेस को स्वयं पता नहीं रहता कि वे किस बात का और क्यों विरोध कर रहे

हरियाणा का अब तक का सबसे बड़ा बजट किया गया पेश, विकास की गति होगी और तेज : रणबीर गंगवा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

हांसी। भाजपा कार्यालय में आयोजित पत्रकार वार्ता को संबोधित करते कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा व अन्य।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने बतौर वित्त मंत्री प्रदेश का अब तक का सबसे बड़ा बजट पेश किया है। यह बजट प्रदेश के हर वर्ग और क्षेत्र के लोगों के विकास व कल्याण को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है और इससे हरियाणा में विकास की गति और तेज होगी। यह बात कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने शनिवार को भाजपा कार्यालय में आयोजित पत्रकार वार्ता में कही। इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष अशोक सैनी, सतवीर वर्मा, बिजेंद्र लोहान, आभास अग्रवाल, धर्मवीर रतेरिया, ओमपाल यादव, राममेहर बैरागी, बलजिंदर यादव सहित भारतीय जनता पार्टी के अनेक पदाधिकारी उपस्थित रहे।

विपक्ष के नेता भूपेंद्र हुड्डा द्वारा बजट को काल्पनिक आंकड़ों का बजट बताने को लेकर पूछे गए सवाल पर कैबिनेट मंत्री गंगवा ने कहा कि कांग्रेस का ध्यान केवल सरकार की नीतियों का विरोध करने पर रहता है और उन्हें स्वयं यह पता नहीं रहता कि वे किस बात का और क्यों विरोध कर रहे हैं।

हांसी मॉडल जिले में रूप में विकसित होगा

कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि नवगठित हांसी जिले को आधुनिक मॉडल जिले के रूप में विकसित किया जाएगा। प्रदेश में हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण द्वारा नए सेक्टर विकसित किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि प्रदेश के सभी 23 जिले राष्ट्रीय राजमार्गों से जुड़ चुके हैं। राज्य में 3500 ऐसी सड़के थीं जिनकी चौड़ाई 12 फुट थी, जिनमें से 1275 सड़कों को 18 फुट किया जा चुका है और शेष सड़कों की चौड़ाई भी बढ़ाई जाएगी। उन्होंने कहा कि लोक निर्माण विभाग की किसी भी सड़क की चौड़ाई 18 फुट से कम नहीं रहने दी जाएगी तथा 5000 किलोमीटर लंबाई की सड़कों का कारपेट किया जाएगा।

कृषि क्षेत्र के लिए अलग निगम बनाने से मिलेगी बेहतर सुविधा

कृषि क्षेत्र के लिए अलग से बिजली निगम बनाने के सवाल पर कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि इससे बिजली विभाग का कार्यभार कम होगा और और इससे किसानों को कृषि कार्यों के लिए बेहतर बिजली सुविधा मिल सकेगी। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा इसके लिए एक विस्तृत प्रारूप तैयार किया जा रहा है। वहीं बजट के एक हिस्से के सरकार के पुराने कर्ज और उसके ब्याज चुकाने में जाने के सवाल पर उन्होंने कहा कि पिछले साल की तुलना में इस वर्ष कर्ज चुकाने के लिए कम ऋण लिया गया है। उन्होंने जोर दिया कि सरकार वित्तीय अनुशासन के साथ आगे बढ़ रही है।

हिसार। विधानसभा में विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करते विधायक चंद्रप्रकाश। फोटो : हरिभूमि

विधायक चंद्रप्रकाश ने ओबीसी आरक्षण को गजटेड क्लास में 27% करने की मांग रखी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

आदमपुर हलके के खालों के पक्का होने से किसानों को काफी राहत मिलेगी : चंद्रप्रकाश

आदमपुर से विधायक चंद्रप्रकाश ने विधानसभा के बजट सत्र के दौरान ओबीसी के आरक्षण एवं दिव्यांगों, सफाई कर्मचारियों व किसानों के हक की आवाज उठाई। उन्होंने आदमपुर हलके से जुड़े जनहित के मुद्दों को भी प्रमुखता से उठाया। चंद्रप्रकाश ने कहा कि प्रदेश सरकार को चाहिए कि ओबीसी वर्ग को आगे बढ़ने के समुचित अवसर प्रदान करे। उन्होंने स्पष्ट किया कि हरियाणा में गजटिड क्लास में बीसी ए और बीसी बी कैटेगरी की ग्रुप ए और बी की नौकरियों में जो आरक्षण 10 प्रतिशत एवं 5 प्रतिशत का प्रावधान है उसे बढ़ाकर केंद्र सरकार की तर्ज पर 16 प्रतिशत एवं 11 प्रतिशत करना चाहिए। इस तरह कुल 27 प्रतिशत का आरक्षण प्रदान करके ओबीसी वर्ग को पर्याप्त अवसर प्रदान करने चाहिए।

विधायक चंद्रप्रकाश ने विधानसभा में स्पष्ट किया कि हिसार शहर के दक्षिण भाग में आबादी बढ़ी है। इसलिए इस क्षेत्र में राजकीय महाविद्यालय की नितांत आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय की स्थापना से आजाद नगर, कैमरी रोड क्षेत्र व गंगवा सहित अन्य निकटवर्ती क्षेत्रों के विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। उन्होंने कहा कि वर्ष 2025 में आदमपुर हलके के खालों के निर्माण के लिए 86 करोड़ रुपये का एस्टीमेट मंजूर किया गया था लेकिन इस दिशा में कोई प्रभावी कदम नहीं उठाए गए। उन्होंने कहा कि किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं मिलता। खालों के पक्का होने से किसानों को काफी राहत मिलेगी। इस संदर्भ में सिंचाई एवं जल संसाधन मंत्री ने विधानसभा में आश्वस्त किया कि आदमपुर हलके के खालों के लिए जो एस्टीमेट आए हुए हैं, उसके आधार पर खालों को पक्का करने का काम जल्द शुरू कर दिया जाएगा।

खबर संक्षेप

शीतला माता मंदिर में 3 दिवसीय मेला कल से

हिसार। मोहल्ला सैनियान स्थित प्राचीन श्री शीतला माता मंदिर में शीतला सप्तमी के पावन अवसर पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी तीन दिवसीय विशाल मेले का आयोजन किया जाएगा। मंदिर के प्रधान मुकेश कुमार मोनू ने बताया कि मेले के सुचारु संचालन के लिए हर वर्ष एक मेला संयोजक नियुक्त किया जाता है। इस वर्ष राहुल सैनी को मेला संयोजक तथा मनजीत वर्मा को सह-संयोजक बनाया गया है। उनकी पूरी टीम मेले के प्रबंधन और व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी संभालेगी।

चेक बाउंस मामले में उद्घोषित आरोपी पकड़ा

हांसी। पुलिस द्वारा पीओ व बेल जंपर के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत सिसाय पुल चौकी पुलिस द्वारा चेक बाउंस मामले उद्घोषित एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। चौकी इंचार्ज एसआई रविकांत ने बताया कि चार कुतुब गेट निवासी सुमित को अदालत द्वारा चेक बाउंस मामले में 22 दिसंबर को उद्घोषित आरोपी घोषित किया गया था।

टटीरी सांग को तुरंत हटाने की मांग

हिसार। हरियाणवी गायक द्वारा जारी किए गए टटीरी सांग को लेकर उठे विवाद पर प्रतिक्रिया देते हुए गुजवि एबीवीपी इकाई के अध्यक्ष कमलदीप अत्री ने कहा कि इस प्रकार के गानों में अश्लील शब्दों और आपत्तिजनक इशारों का प्रयोग समाज की मर्यादाओं के खिलाफ है। ऐसे गीत युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं तथा महिलाओं के सम्मान को ठेस पहुंचाते हैं। इस अश्लील सांग को सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से तुरंत हटाया जाए तथा संबंधित कलाकार पर कानूनी कार्रवाई की जाए ताकि कोई भी समाज की संस्कृति और महिलाओं की गरिमा के साथ इस प्रकार का खिलवाड़ करने का साहस न कर सके।

राजकीय पाठशाला में सोसायटी सदस्यों ने बच्चों को बैग व स्टेशनरी वितरित की

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। बच्चों को बैग वितरित करते संस्था के पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

ब्रम्हा रिसर्च वेलफेयर सोसायटी के सदस्यों की ओर से राजकीय पाठशाला डोगरान मोहल्ला में एक सराहनीय सामाजिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्कूल के बच्चों को बैग, कॉपियां व अन्य स्टेशनरी का सामान वितरित किया गया। इस पहल से बच्चों का मनोबल बढ़ाया गया और उन्हें शिक्षा के प्रति प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में संस्था के सदस्य रवि सरदाना, डॉ. दीपक दलाल, डॉ. रामपाल, डॉ. घनश्याम माहीया, रामफल पखाला, विमन्यु सरदाना, डॉ. सिमरन, संजना, पारुल, अंकिता, अंजली और रेनू विशेष रूप से उपस्थित रहे। सभी सदस्यों ने बच्चों को शिक्षा का महत्व बताते हुए मन लगाकर पढ़ाई करने और अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर स्कूल की प्रिंसिपल कलावंती के अलावा शिक्षिकाएं पूजा व रश्मि ने संस्था के सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

अढ़ाई माह से लापता व्यक्ति का शव जोहड़ से बरामद

हिसार। करीब अढ़ाई महीने से लापता गांव खरड़ के तेजबीर का शव शुक्रवार की दोपहर गांव के जोहड़ से बरामद हुआ है। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर ग्रामीणों की मदद से शव को जोहड़ से बाहर निकाला और पोस्टमार्टम के लिए नागरिक अस्पताल की मोर्चरी में भिजवा। शव की गली-सड़ी हालत को देखते उसे अग्रोहा मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया है। परिजनों के अनुसार 45 वर्षीय तेजबीर मंदबुद्धि था और गांव खरड़ से 29 दिसंबर 2025 से लापता हो गया था। इस बारे में जनवरी माह में तेजबीर की पत्नी सुशीला की तरफ से पुलिस में गुमशुदगी की रपट दर्ज करवाई गई थी।

बॉयज सिंगल्ज में कपिल व गर्ल्स में वैनी विजेता

- लुवास में बैडमिंटन प्रतियोगिता का रोमांचक समापन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। लुवास में बेडमिंटन खेलते खिलाड़ी। फोटो : हरिभूमि

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुवास) के खेल विभाग की ओर से आयोजित अंतर-विभागीय बैडमिंटन प्रतियोगिता का भव्य एवं रोमांचक समापन उत्साह, ऊर्जा और खेल भावना के माहौल में संपन्न हुआ। कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा के मार्गदर्शन में छात्र कल्याण निदेशालय के तत्वावधान में यह प्रतियोगिता 20 फरवरी से प्रारंभ हुई थी। लगभग दो सप्ताह तक चले इस टूर्नामेंट में विश्वविद्यालय के 40 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता के मुकाबले विभिन्न श्रेणियों में हुए, जिनमें बॉयज सिंगल्स, बॉयज डबल्स, गर्ल्स सिंगल्स, गर्ल्स डबल्स तथा मिश्रित युगल शामिल रहे। बॉयज सिंगल्स के फाइनल मुकाबले में कपिल और संजीत के बीच कड़ा मुकाबला देखने को मिला, जिसमें कपिल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जीत हासिल की, जबकि संजीत उपविजेता रहे। बॉयज डबल्स में संजीत और लजीत की जोड़ी विजेता रही तथा कपिल और लोकेश उपविजेता बने। गर्ल्स सिंगल्स में वैनी ने उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन करते हुए खिताब अपने नाम किया और प्रार्थना उपविजेता रहीं। गर्ल्स डबल्स में वैनी और श्रुति की जोड़ी विजेता रही, जबकि पायल और प्रार्थना उपविजेता रहीं। मिश्रित युगल मुकाबले में प्रिया और संजीत ने अंतिम क्षणों में शानदार प्रदर्शन करते हुए जीत दर्ज की, जबकि अमन और खुशी उपविजेता रहे। इसके अतिरिक्त बॉयज डबल्स में सुनील सुथार और पंकज कंबोज तथा मिश्रित युगल में संदीप सैंडी और प्रार्थना ने तृतीय स्थान (कांस्य पदक) प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता के मुख्य आयोजक सुनील सुथार, खुशी मेहरा और संजीत रहे।

युवा शक्ति और देश के भविष्य को कमजोर कर देता नशा

समापन समारोह में सीन ऑफ क्राइम के डिप्टी डायरेक्टर डॉ. रवि कुमार मुख्य अतिथि रहे। इस अवसर पर उन्होंने युवाओं को नशे से दूर रहने की सलाह देते हुए कहा कि नशा युवा शक्ति और देश के भविष्य को कमजोर करता है। इस अवसर पर छात्र कल्याण निदेशक डॉ. संदीप गुप्ता, सहायक छात्र कल्याण निदेशक (खेल) डॉ. यशवंत सिंह, बैडमिंटन अध्यक्ष डॉ. तरुण गुप्ता सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में विजेता एवं उपविजेता खिलाड़ियों को ट्रॉफी, पदक और स्मृति चिह्न प्रदान किए गए।

अंतर विश्वविद्यालय सांस्कृतिक उत्सव स्पंदन में लुवास के विद्यार्थियों ने जीते दस पदक

- सांस्कृतिक गतिविधियों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे लुवास के विद्यार्थी : डॉ. वर्मा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। कुलपति से मिलते उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी। फोटो : हरिभूमि

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुवास) के विद्यार्थियों ने स्पंदन अंतर विश्वविद्यालय सांस्कृतिक उत्सव में शानदार प्रदर्शन करते हुए कुल 10 पदक जीतकर विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया। यह उत्सव केंद्रीय विश्वविद्यालय हरियाणा, महेंद्रगढ़ में आयोजित किया गया था।

लुवास की टीम ने विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए एक प्रथम, कई द्वितीय और तृतीय स्थान हासिल किए। यह टीम कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा के मार्गदर्शन व निदेशक छात्र कल्याण डॉ. संदीप कुमार के तत्वावधान में प्रतियोगिता में शामिल हुई। कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा ने शिष्टाचार भेंटके दौरान सभी प्रतिभागी विद्यार्थियों को बधाई दी।

इस अवसर पर निदेशक छात्र कल्याण डॉ. संदीप कुमार गुप्ता ने कहा कि विद्यार्थियों की यह सफलता उनके निरंतर अभ्यास, टीम भावना और आत्मविश्वास का परिणाम है। टीम के साथ डॉ. रिचा और डॉ. अनिल चितरा कंटिजेंट इंचार्ज के रूप में गए। इस दौरान साहित्यिक क्लब के अध्यक्ष डॉ. विशाल शर्मा तथा संगीत एवं नृत्य क्लब के अध्यक्ष डॉ. मान सिंह ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। हिंदी काव्य पाठ में राहुल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वालों में अंकित (संस्कृत काव्य पाठ), शिवम (स्पॉट पेंटिंग), अभिनव तुरान (वेस्टर्न वोकल–सोलो), वेस्टर्न ग्रुप सॉन्ग में लुवास टीम, संजय (लाइट वोकल–सोलो) तथा लोक नृत्य में लुवास टीम शामिल रही। इसके अलावा तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों में वाद-विवाद प्रतियोगिता में लुवास टीम, प्रिक्शित (स्पॉट फोटोग्राफी) तथा योगेश (वेस्टर्न इंस्ट्रुमेंटल) रहे।

रसोई गैस की कीमतों में बढ़ोतरी से जनता पर महंगाई की मार

हिसार। कांग्रेस के जिला अध्यक्ष बृजलाल बहबलपुरिया ने आरोप लगाया है कि मोदी सरकार में लगातार बढ़ती महंगाई ने आम आदमी की कमर तोड़ दी है। आज से घरेलू रसोई गैस सिलेंडर की कीमत में 60 रुपये तथा व्यावसायिक एलपीजी सिलेंडर में 115 रुपये की बढ़ोतरी कर दी गई है, जिससे आम परिवारों और छोटे व्यापारियों पर भारी आर्थिक बोझ पड़ा है।

बृजलाल बहबलपुरिया ने कहा कि कुछ समय पहले केंद्र सरकार यह दावा कर रही थी कि देश में एलपीजी की कोई कमी नहीं है, फिर अचानक इतनी बड़ी बढ़ोतरी करना यह साबित करता है कि भाजपा सरकार आम जनता की परेशानियों से पूरी तरह बेपरवाह है। आज हालात यह हो गए हैं कि रसोई चलाना भी आम आदमी के लिए मुश्किल होता जा रहा है। बृजलाल बहबलपुरिया ने कहा कि हाल ही में यह खबर सामने आई है कि अमेरिका ने भारत को 30 दिनों की छूट दी है जिसमें भारत रूस से कच्चा तेल खरीद सकता है।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी हमेशा आम जनता की आवाज उठाती रही है और आगे भी जनता के हक और देश की गरिमा की रक्षा के लिए मजबूती से संघर्ष करती रहेगी।

सोना-चांदी की बढ़ती कीमतों पर संसद में प्रश्न से पहले पार्टी मंच पर होगी चर्चा : कुमारी सैलजा

उकलाना। पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सिरसा से लोकसभा सांसद कुमारी सैलजा ने हिसार-चंडीगढ़ रोड पर दीनदयाल उपाध्याय योजना के तहत विकसित किए जा रहे रामेश्वर ग्रीन सेक्टर-3 का दौरा किया। सैलजा ने कहा कि यह परियोजना उकलाना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। कुमारी सैलजा ने वहां मौजूद कार्यकर्ताओं से मुलाकात की और बरवाला बार एसोसिएशन की कार्यकारिणी के पदाधिकारियों को भी शुभकामनाएं दीं। सोना-चांदी की बढ़ती कीमतों पर प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने कहा कि आज सोना-चांदी आम आदमी की पहुंच से बाहर होता जा रहा है। महिलाओं का स्त्रीधन के रूप में रखा गया सोना-चांदी परिवार के संकट के समय हमेशा सहारा बना है। देश पर जब-जब संकट आया है, तब-तब महिलाओं ने अपने स्वर्ण आभूषण देकर देश को मजबूती देने का काम किया है। इसलिए सरकार को सोना-चांदी को लेकर ऐसी नीति बनानी चाहिए जिससे यह आम आदमी की पहुंच में आ सके, क्योंकि इसका सीधा संबंध देश की अर्थव्यवस्था से भी है। संसद में इस पर प्रश्न उठाने को लेकर पार्टी सत्र में चर्चा करेंगे। विदेश नीति पर उन्होंने कहा कि भारत को अपनी विदेश नीति में स्वतंत्रता बनाए रखनी चाहिए। आज स्थिति यह बनती जा रही है कि अमेरिका यह तय करने लगा है कि भारत किस देश से तेल खरीदे या किससे नहीं। यह देश के लिए ठीक नहीं है। भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र है और उसे अपने राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए अपने फैसले स्वयं लेने चाहिए।

हत्या के मामले में दो दोषी करार

- कोर्ट ने 2022 में डोभी में हुए हत्याकांड में दिया फैसला,
- अदालत ने चार को सबूतों के अभाव में बरी किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

जिला एवं सत्र न्यायाधीश अलका मलिक की अदालत ने जिले के गांव डोभी में वर्ष 2022 में हुए सुनील हत्याकांड मामले में दो आरोपियों अतुल उर्फ अमित व प्रकाश पंडित को हत्या का दोषी ठहराया है। इस मामले में अदालत ने रोशनी, मनीषा, वीरेंद्र प्रताप और अभिषेक को सबूतों के अभाव में बरी कर दिया गया। दोषी करार दिए गए दोनों दोषियों अतुल व प्रकाश पंडित को 11 मार्च को सजा सुनाएगी। अदालत में चले मामले में अनुसार इस संबंध में सदर थाना पुलिस ने 5 अगस्त 2022 को हत्या सहित विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया था। डोभी गांव निवासी अनिल कुमार ने पुलिस को दी शिकायत में बताया था कि वह खेती करता है और उसके ताऊ रामकुमार गांव के ही सोनू की जमीन आधे हिस्से पर लेकर खेती करते हैं। रामकुमार अपने परिवार के साथ खेत में बनी ढाणी में रहते हैं। अनिल के अनुसार, रामकुमार के छोटे बेटे सुनील की शादी वर्ष 2021 में भादरा के गांव भिराणी निवासी रोशनी से हुई थी। पांच अगस्त 2022 की सुबह उन्हें सूचना मिली कि रामकुमार, उनकी पत्नी बिमला और सुनील पर अज्ञात लोगों ने हमला कर दिया है। जब वे मौके पर पहुंचे तो देखा कि सुनील मृत अवस्था में पड़ा था, जबकि रामकुमार और बिमला घायल थे। हमलावरों ने चाकू और डंडों से हमला किया था। घटना के बाद सुनील की पत्नी रोशनी मौके से गायब थी, लेकिन रोशनी ने कोर्ट में सुनील को अपना पति बताया और उसके साथ रहने लगी थी। पुलिस ने हत्या की धाराओं के तहत केस दर्ज किया था और 6 लोगों को गिरफ्तार किया था। अभिषेक के अधिवक्ता करणदीप सिंह ने बताया कि वारदात से पहले अतुल ने स्प्रे, हेलमेट, बेसबॉल बैट, मास्क और वॉकी-टॉकी जैसे कई सामान ऑनलाइन मंगवाए थे, जिनका इस्तेमाल घटना में किया गया।

याचिका भी की दायर

शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया था कि रोशनी शादी से पहले अतुल उर्फ अमित के साथ बिहार चली गई थी। इस संबंध में भिराणी थाने में केस भी दर्ज हुआ था। बाद में रोशनी की शादी सुनील से हो गई थी। अतुल ने रोशनी को पत्नी बताते हुए सुको में याचिका भी दायर की थी।

कार्यक्रम ओएसजीयू में धूमधाम से मनाया अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

शिक्षा व समाज उत्थान में महिलाओं की भूमिका सर्वोपरि : डॉ. गोयल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। एसडीएम ज्योति मित्तल को स्मृति चिह्न देती प्रो-चांसलर डॉ. पूनम गोयल।

एसडीएम ने अपने अनुभव किए साझा

ओम स्टर्लिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय (ओएसजीयू) में शनिवार को 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के उपलक्ष्य में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 'गिव टू गेन' की थीम पर आधारित इस कार्यक्रम में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाने वाली लगभग 60 महिलाओं को आमंत्रित किया गया और उन्हें सम्मानित किया गया।

विश्वविद्यालय के चांसलर डॉ. पुनीत गोयल और प्रो-चांसलर डॉ. पूनम गोयल ने सभी महिलाओं का सम्मानजनक स्वागत किया और अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की बधाई दी। कार्यक्रम का आगाज़ गणेश वंदना और ज्योति प्रज्वलित करने के साथ हुआ। डॉ पुनीत गोयल ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा और समाज के उत्थान में महिलाओं की भूमिका सर्वोपरि है। ओएसजीयू का उद्देश्य न केवल शिक्षा देना है, बल्कि ऐसी नारी शक्ति को तैयार करना है जो आत्मनिर्भर होकर समाज के निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान दे सके। प्रो चांसलर डॉ. पूनम गोयल ने सभी नारी शक्ति को बधाई देते हुए कहा कि महिला सशक्तिकरण का अर्थ केवल अधिकार देना नहीं, बल्कि उन्हें मानसिक और सामाजिक रूप से इतना सशक्त बनाना है कि वे अपने निर्णय स्वयं ले सकें।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि हिसार की एसडीएम ज्योति मित्तल रहीं। उन्होंने उपस्थित महिलाओं को संबोधित करते हुए अपने संघर्ष और सफलता के अनुभव साझा किए। उन्होंने कहा कि महिलाएं समाज का स्तंभ हैं और उनकी सशक्तिकरण से ही एक उन्नत राष्ट्र का निर्माण संभव है। कार्यक्रम के दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. (डॉ.) वंदना पूनिया व डॉ. सरिता कालरा ने भी अपने विचार रखे और महिलाओं को अपने स्वास्थ्य व अधिकारों के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया। विश्वविद्यालय की परंपरा का निर्वहन करते हुए मुख्य अतिथि,विशिष्ट अतिथि एवं आई हुई सभी नारी शक्ति स्वागत 'पौधा' भेंट कर किया। कुलपति डॉ. एन पी कौशिक, प्रति कुलपति डॉ. राजेंद्र सिंह छिल्लर व रजिस्ट्रार डॉ. सत्यवीर ने महिलाओं के सम्मान में कहा कि आज के युग में महिलाएं केवल पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर ही नहीं चल रही हैं, बल्कि कई क्षेत्रों में नेतृत्व भी कर रही हैं। इस कार्यक्रम के संचालक एप्लाइड साइंस की डीन डॉ. रेनू शर्मा व लीगल विभाग कि डीन डॉ नीलम सिहाग रहे। मंच का संचालन डवोकेट नीरज तनेजा और डॉ. दीपा खाना ने किया।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
विशेष
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस
P-1
रोहतक,रविवार 8 मार्च 2026

हर क्षेत्र में फहरा रहा आधी आबादी का परचम

अब वो दिन लद गए, जब आधी आबादी के लिए कुछ निश्चित कार्यक्षेत्र ही हुआ करते थे। आज के दौर में बेटियां हर उस क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं, जिन्हें पहले उनके लिए वर्जित माना जाता था। देश की सुरक्षा से लेकर वैज्ञानिक अनुसंधान तक और खेल के मैदानों में भी कामयाबी की नित नई मिसालें गढ़ रही हैं। आधी आबादी के विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ते कदम पर एक नजर।

{ कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम }

अभी सुबह के 4 बज रहे हैं। हरियाणा के एक छोटे से गांव में रहने वाली 19 साल की एक लड़की अपने जूतों में फीते कस रही है। उसके सामने कोई दर्शक नहीं है, कोई कैमरा नहीं है। है तो सिर्फ एक लंबा सा ट्रैक और दिल दिमाग में एक रंगीन सपना। यह सपना एथलेटिक्स में कुछ कर दिखाने का है। यह सपना किसी एक हरियाणवी लड़की का ही नहीं है, बल्कि आज भारत की हजारों-लाखों किशोरियों और युवतियों की आंखों में खेल से लेकर सेना और विज्ञान जैसे सभी जटिल और एक जमाने तक पुरुषों के वर्चस्व वाले क्षेत्र में कुछ कर दिखाने का है। साल 2026 का भारत इस मायने में ऐतिहासिक दौर से गुजर रहा है, क्योंकि आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहां युवा महिलाएं दस्तक न दे रही हों। अब देश में कोई ऐसा क्षेत्र विशेष नहीं रहा, जिसे एक्सक्लूसिविली पुरुषों का वर्चस्व वाला क्षेत्र कहा जा सके। सभी क्षेत्रों में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर भारत की युवा महिलाएं खड़ी हैं।

गढ़ रहीं जीत की नई परिभाषा

भारत में खेल लंबे समय तक पुरुषों के वर्चस्व वाला क्षेत्र माना जाता रहा है। लेकिन हाल के कुछ दशकों में युवा महिलाओं ने इस धारणा को बदल दिया है। हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, पूर्वोत्तर भारत आदि की युवा महिला एथलीटों ने ओलंपिक, एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों और विश्व चैंपियनशिप में कामयाबी के झंडे गाड़े हैं। साल 2024 के पेरिस ओलंपिक में भारत की महिला खिलाड़ियों ने कुल पदकों में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उसके पहले कई ओलंपिक खेल ऐसे भी संपन्न हुए हैं, जब भारत की तरफ से कामयाबी का सेहरा सिर्फ लड़कियों के सिर बंधा है। आज बैडमिंटन, शूटिंग, क्रिकेट, हॉकी, रेसलिंग और बॉक्सिंग ये ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें भारत की बेटियां राज कर रही हैं। अब देश के गांवों से युवा महिला पहलवान और मुक्केबाज निकल रही हैं। खेलों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का एक महत्वपूर्ण कारण है, खेलों को लेकर शुरू की गईं कई शानदार सरकारी योजनाएं, जिसमें एक प्रमुख योजना 'खेलो इंडिया' भी शामिल है। इसमें बेहतर प्रशिक्षण की बदौलत भारतीय लड़कियां पूरी दुनिया में कामयाबी के झंडे गाड़ रही हैं। लेकिन इससे बड़ा परिवर्तन उन भारतीय परिवारों का है, जो उनकी मानसिकता में आया है। अब गांवों में भी मां-बाप बेटियों को खेल के मैदान में खुशी-खुशी भेजने लगे हैं। जबकि एक समय तक उन्हें सिर्फ शादी के लिए पाल पोसकर बड़ा किया जाता था।

संभाल रहीं सुरक्षा की कमान

लंबे समय तक भारतीय सेना महिलाओं के लिए बहुत सीमित अवसर प्रदान करती रही है। लेकिन पिछले कुछ दशकों में यह स्थिति तेजी से बदली है। आज युवा महिलाएं न केवल बड़ी संख्या में सैन्य अधिकारी बन रही हैं बल्कि लड़ाकू विमान उड़ा रही हैं, वे युद्ध पोतों पर तैनात हैं। भारतीय वायु सेना में महिला फाइटर पायलटों की संख्या लगातार बढ़ रही है। साल 2003 के बाद राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) में महिलाओं के प्रवेश ने इस बदलाव को गति दी है। अब 18-19 वर्ष की लड़कियां सीधी एनडीए में प्रशिक्षण लेकर सेना की स्थायी अधिकारी बन रही हैं। यह बदलाव सिर्फ सैन्य संरक्षण का बदलाव नहीं है बल्कि सामाजिक सोच में आए परिवर्तन का संकेत है। एक समय था, जब सेना को पूर्णतः पुरुषों का पेशा माना जाता था। लेकिन अब युवा महिलाएं सीमा की सुरक्षा में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हैं। नौसेना में भी महिलाएं युद्ध पोतों पर तैनात हैं। लंबी समुद्री यात्राओं का हिस्सा हैं और यह साबित कर रही हैं कि शारीरिक और मानसिक क्षमता के मामले में महिलाएं किसी भी तरह से पुरुषों से कम नहीं हैं। पुरुषों के समान ही वे भारतीय सीमाओं की रक्षा में कंधे से कंधा मिलाकर बढ़ रही हैं।

हासिल कर रहीं वैज्ञानिक उपलब्धियां

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भी युवा महिलाएं बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), राष्ट्रीय रक्षा अनुसंधान संगठन (डीआरडीओ) और विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों में महिलाओं की न केवल भागीदारी बहुत तेजी से बढ़ रही है बल्कि कई क्षेत्रों में तो वो पुरुषों से भी आगे हैं। हाल के सालों में देश के सबसे महत्वपूर्ण माने गए चंद्रयान और मंगलयान जैसे अंतरिक्ष मिशनों में भारतीय महिला वैज्ञानिकों की कामयाबी देखते ही बनी है। यही कारण है कि आज देश में विज्ञान के क्षेत्र में दाखिला लेने वाली लड़कियों की बड़ी संख्या सामने आ रही है, क्योंकि आज भारत की एक नहीं बल्कि अनेक अंतरिक्ष अभियानों में भारत की युवा महिलाएं कामयाबी का श्रेय हासिल कर रही हैं। अंतरिक्ष विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और रक्षा अनुसंधान में भी इनकी भूमिका और योगदान पुरुषों से पीछे नहीं है। आईआईटी, आईआईएससी और अन्य प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों में जाकर देख लीजिए, आज ज्यादातर जगहों में महिला छात्र, पुरुष छात्रों के बराबर हैं, कहीं कुछ कम हैं। ये छात्राएं न केवल पढ़ाई कर रही हैं बल्कि अपनी मौलिक मेधा से अपने लक्षित कार्यक्रमों में सफलता हासिल करके उपलब्धियों की नई कहानी रच रही हैं। *

बदल रही है सामाजिक मानसिकता

हमारी बेटियों को यह शानदार सफलताएं मिल रही हैं, तो इसमें समाज की सोच और उसके नजरिए में बदलाव का भी बड़ा योगदान है। पहले जहां बेटियों के लिए सीमित विकल्प होते थे, अब वे हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। छोटे शहरों से आने वाली युवा महिलाएं अब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा बिखेर रही हैं। डिजिटल शिक्षा, इंटरनेट, सोशल मीडिया ने भी इस परिवर्तन में बड़ी भूमिका निभाई है। इसलिए अब समाज के विभिन्न तबकों से उठकर आने वाली महिलाएं अपने आपको भावी रोल मॉडल में देख सकती हैं और उनसे प्रेरणा हासिल की जा सकती है। हालांकि यह अलग बात है कि अभी महिलाओं ने अपने हिस्से की सारी जंग जीती नहीं है। अभी भी अनेक किस्म की चुनौतियां मौजूद हैं। लेकिन चुनौतियां तो हर क्षेत्र में हैं। असली बात यह है कि महिलाएं लगातार हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। हालांकि कुछ मां-बाप जिनकी वजह से महिलाओं की अभी भी पिछड़ी सोच है, उन्हें जल्द से जल्द अपने को बदलना होगा। नहीं तो वो लोग इन्हें अपने साख से खारिज कर देंगे, जिनकी नजरों में लड़का और लड़की बराबर है। आज के इस एआई दौर में एआई का विश्लेषण बताता है कि आने वाले भविष्य में लड़कियों की मौजूदगी और भी महत्वपूर्ण होगी। विशेषकर इस लिहाज से भी कि अब नई पीढ़ी में लड़कियां जाति और लिंग से परिभाषित नहीं होतीं। अपने काम और काम में हासिल महारत से सम्मान पा रही हैं।

बीते कुछ दशकों में हमारे समाज की महिलाएं घर-परिवार की जिम्मेदारी संभालने के साथ कार्यक्षेत्र में भी शानदार मुकाम हासिल करने लगी हैं। यह नया सामाजिक बदलाव, परिवार और कार्यक्षेत्र में संतुलन की उनकी कुशल भूमिका से ही संभव हो पा रहा है।

परिवार-कार्यक्षेत्र में संतुलन बनातीं महिलाएं

{ बदलाव / अपराजिता }

आठ मार्च, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, केवल एक उत्सव का दिन नहीं है। यह गहरे सामाजिक परिवर्तन और प्रतीक का दिन भी है। यही प्रतीकात्मक परिवर्तन, भारत की युवा महिलाओं की सोच, प्राथमिकताओं और जीवन के निर्णयों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है। एक जमाना था, जब अधिकांश युवतियां विवाह को ही सबसे जरूरी लक्ष्य मानकर जीवन जीती थीं। लेकिन आज भारत की युवा नारी के लिए विवाह एकमात्र जीवन लक्ष्य नहीं है बल्कि यह उसके जीवन के कई विकल्पों में से एक है। भारत की युवा महिलाएं करियर, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को इन दिनों बराबर का महत्व दे रही हैं और उनकी प्राथमिकता में यह सब अचानक नहीं आया, इसके पीछे दशकों की शिक्षा, आर्थिक अवसरों का विस्तार तथा आत्मसम्मान की नई जागृति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्हीं सबके चलते विवाह जो कभी जीवन का एकमात्र प्रथम और आखिरी लक्ष्य हुआ करता था, आज की महिलाओं के लिए वह एक वैकल्पिक बन चुका है।

सोच में आया बड़ा बदलाव: पहले के दौर में जहां लड़कियां परिवार और समाज के दबाव में अपनी शिक्षा और करियर को लेकर समझौता कर लेती थीं, आज वे कतई ऐसा नहीं कर रही हैं। आज युवा महिलाएं अपनी पहचान का केंद्र विवाह को नहीं, अपनी निजी उपलब्धियों (जिनमें करियर और उनकी अपनी रचनात्मकता शामिल है) को विवाह से कहीं ज्यादा तरजीह दे रही हैं। आज की युवा महिलाएं पहले अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हैं, अपनी आर्थिक और मानसिक स्वतंत्रता सुनिश्चित करना चाहती हैं, इसके बाद विवाह के बंधन में बंधती हैं। दिल्ली, बेंग्लुरु, मुंबई, पुणे, हैदराबाद, चेन्नई और कोलकाता ही नहीं बल्कि रांची, लखनऊ और जयपुर जैसे शहरों में भी अब यह बदलाव तेजी से देखने को मिल रहा है। आज इन शहरों में ही नहीं बल्कि छोटे-छोटे कस्बों में भी युवा महिलाओं की विवाह की उम्र बहुत आसानी से 28 से 30 साल के बीच हो गई है। जबकि एक जमाना था, जब किसी महिला की 20 साल तक अगर शादी नहीं होती थी, तो घर-परिवार में हंगामा मच जाता था। यही नहीं आज देश में 8 करोड़ से ज्यादा महिलाएं अपने स्वतंत्र निर्णय के चलते बिना विवाह किए रह रही हैं। आज के 30-40 साल पहले इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। वास्तव में महिलाओं में आया यह बदलाव सिर्फ शादी की उम्र में देरी का बदलाव नहीं है बल्कि उनकी सोच में अपने प्रति आई परिपक्वता का बदलाव है।

मनमुताबिक ले रहीं निर्णय: अब महिलाएं बड़ी सहजता से अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के संबंध में निर्णय लेने लगी हैं और यह निर्णय केवल घर से हजारों किलोमीटर दूर जाकर काम करने भर का नहीं है बल्कि यह निर्णय इस मामले में भी है कि उन्हें किस क्षेत्र में अपना करियर बनाना है, कब विवाह करना है और किस तरह की जीवनशैली अपनानी है? डिजिटल युग ने युवा महिलाओं की इस स्वतंत्रता को नए सिरे से मजबूत किया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने महिलाओं को जानकारी देने, उन्हें प्रेरित करने और आगे बढ़ने के कई नए अवसर प्रदान किए हैं। आज की युवा महिलाएं देश ही नहीं दुनिया को अपनी नजरों से देख सकती हैं, समझ सकती हैं और अपने संबंध में बेहतर विकल्प चुन सकती हैं। यह स्वतंत्रता केवल व्यक्तिगत नहीं है बल्कि सामाजिक परिवर्तन का संकेत भी है। इस बदलाव में परिवार की भूमिका भी कहीं न कहीं शामिल है। *

बदलती प्राथमिकताओं की नई तस्वीर

- भारत की महिलाओं की औसत विवाह आयु अब 20 से 22 वर्ष से बढ़कर 25 से 28 वर्ष हो चुकी है।
- उच्च शिक्षा में छात्राओं की भागीदारी अब 59 फीसदी तक पहुंच गई है।
- सिविल सेवा परीक्षा में उनकी सफलता की दर बढ़कर 30 से 35 प्रतिशत हो चुकी है।
- स्टार्टअप के इकोसिस्टम में भी अब महिलाएं अपनी हिस्सेदारी हासिल कर रही हैं। आज हजारों की तादाद में युवा महिलाएं हैं, जिनके अब स्टार्टअप चल रहे हैं और उनकी यह संख्या लगातार बढ़ रही है।
- कॉरपोरेट क्षेत्र में महिला कर्मचारियों की भागीदारी लगातार बढ़ रही है।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से लाखों महिलाएं स्वरोजगार से भी जुड़ रही हैं। इस तरह अब नई पीढ़ी की महिलाएं आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि निर्णायक बन रही हैं।

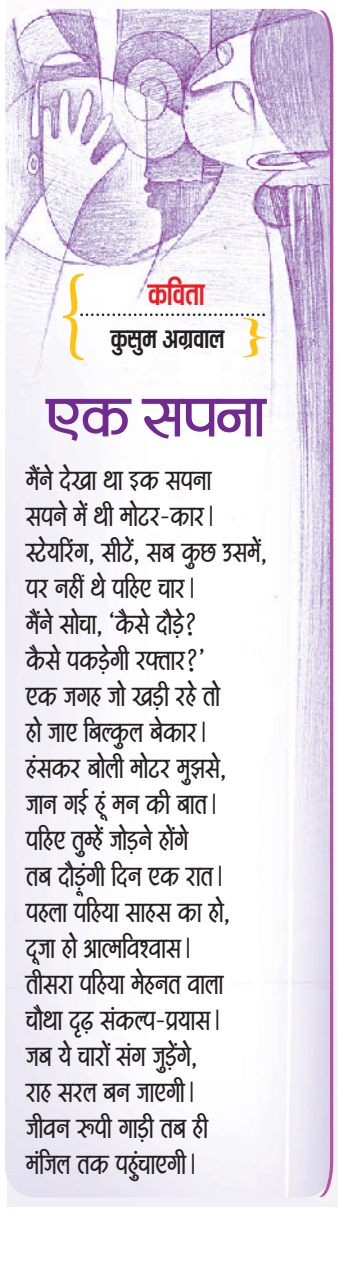

{ कविता / कुसुम अग्रवाल }

एक सपना

मैंने देखा था इक सपना
सपने में थी मोटर-कार।
स्टेयरिंग, सीटें, सब कुछ उसमें,
पर नहीं थे पहिए चार।
मैंने सोचा, 'कैसे दौड़े?
कैसे पकड़ेगी रफ्तार?'
एक जगह जो खड़ी रहे तो
हो जाए बिल्कुल बेकार।
हंसकर बोली मोटर मुझसे,
जान गई हूं मन की बात।
पहिए तुम्हें जोड़ने होंगे
तब दौड़ूंगी दिन एक रात।
पहला पहिया साहस का हो,
दूजा हो आत्मविश्वास।
तीसरा पहिया मेहनत वाला
चौथा दृढ़ संकल्प-प्रयास।
जब ये चारों संग जुड़ेंगे,
राह सरल बन जाएगी।
जीवन रूपी गाड़ी तब ही
मंजिल तक पहुंचाएगी।

{ लघुकथाएं }

सपनों की उड़ान

तुम्हारे जाने की टिकट बुक करवा दूं?' दिवेश का मैसेज आए आधे घंटे हो चुके थे, लेकिन रीमा को कोई जवाब सूझ नहीं रहा था। मन कुछ कह रहा था, दिमाग कुछ और!

थोड़ी देर में दिवेश का फोन आया, उसने पूछा, 'क्या हुआ तुमने कोई जवाब नहीं दिया?' 'क्या जवाब दूं, समझ नहीं आ रहा मुझे!' रीमा बुझे स्वर में बोली।

'लिटरेचर का इतना बड़ा सेमिनार है, लेकिन तुम सब को छोड़कर हफ्ते भर के लिए बाहर जाना सही नहीं रहेगा। मेरा ध्यान यहीं लगा रहेगा।' इतना कह रीमा ने फोन रख दिया।

एआई इमेज

शाम को दिवेश दफ्तर से आए। सभी रुटीन के हिसाब से अपने-अपने काम में लगे थे। रीमा ने संतुष्टि भरी दृष्टि से सबको देखा, फिर वह भी अपने काम में लग गई।

थोड़ी देर बाद दिवेश रसोई में आए और रीमा के हाथों में एक पैकेट थमाते हुए बोले, 'सबका ध्यान रखना और सबसे प्यार करना अच्छी बात है, लेकिन थोड़ा अपने बारे में भी सोचना पाप नहीं। मैं तुम्हारे लिए अच्छी सी ड्रेस लेकर आया हूं। तुम यही ड्रेस पहन कर अपने सेमिनार में जाना। मैंने तुम्हारे जाने का टिकट बुक कर दिया है।'

'लेकिन बच्चे..!' रीमा ने पूछा।

'हम लोग रह लेंगे मम्मा। बड़े हो गए हैं हम भी। पापा ने हमें सब बता दिया है।' पीछे से बच्चों की आवाज आई।

'हां बिल्कुल! आज मैं, कल को बच्चे अपने सेमिनार और दूसरे कामों से बाहर जाएंगे ही। फिर तुम क्यों सब कुछ छोड़ती रहो! बेझिझक जाओ।' दिवेश बोले।

रीमा का चेहरा खुशी से खिल उठा। अपने सपनों को पंख लगते देख उसकी आंखें छलछला उठीं। *

-अलका 'सोनी'

हार्दिक शुभकामनाएं !

शांति आधे घंटे की छुट्टी मिली है...जल्दी से रोटी खा ले, वरना ठेकेदार चिल्लाएगा।' बेला ने कहा।

'चिल्लाए तो... चिल्लाने दे। पहले मैं अपनी बेटी को दूध पिलाऊंगी...उसे भी तो भूख लग रही होगी।' शांति अपनी छह महीने की बच्ची को गोद में उठाते हुए बोली। कलेजे के टुकड़े को दूध पिलाकर लाड़ लड़ाते-लड़ाते कब आधा घंटा बीत गया...शांति को पता ही नहीं चला।

एआई इमेज

'अरी शांति की बच्ची... चल उठ काम पर लग जा देखती नहीं पांच मिनट ऊपर हो गए हैं...।' ठेकेदार चिल्लाया।

बेला बीच में बोल पड़ी, 'ठेकेदार जी, अभी शांति ने रोटी नहीं खाई है बच्ची को दूध पिला रही थी बेचारी...।'

'चल तू अपना काम कर... फालतू की पंचायत मत कर।'

ठेकेदार ने बेला को डांटा।

उसी समय एक सफेद चमचमाती कार आकर रुकी। उसमें से एक भद्र महिला बाहर निकली। ठेकेदार दौड़ता हुआ उसके पास पहुंचा। उन्हें एक गुलदस्ता देते हुए बोला, 'मैडम, महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।' *

-गोविंद भारद्वाज

घरेलू महिला

आशी को बस घरेलू काम आते हैं। देखो, इस कमरे को कैसा चमका रखा है।' आशी का पति पवन अपने दोस्तों के साथ गपशप करते हुए बोला।

आशी इन दिनों एक परिचित के विवाह समारोह में शामिल होने शहर से बाहर गई हुई थी। पवन ने घर पर दोस्तों के साथ गपशप के बाद सबको विदा किया ही था कि आशी का फोन आया। वह पति से बोली, 'पवन, बस कुछ मिनटों का एक काम है। पूजा घर में एक हरी फाइल रखी है। उसे निकालकर देख लो और पॉलिसी की किश्त जमा कर देना जरा।'

इतना कहकर और बाकी हाल-चाल पूछकर आशी ने फोन काट दिया।

पवन को झुंझलाहट हुई, अब तक पॉलिसी के रुपए आशी ही जमा करती रही थी। 'अजीब है यह आशी भी, इतना सा काम नहीं होता इससे।' बड़बड़ करता पवन पूजा घर में पहुंचा।

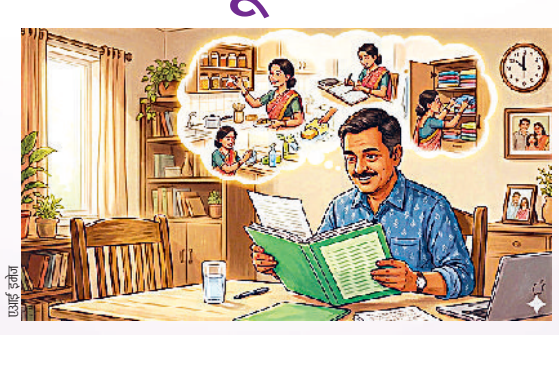
एआई इमेज

हरी फाइल एक नजर में ही ऊपर रखी दिख गई। उसने फाइल को खोला। ऊपर ही वह पॉलिसी रखी थी। उसके बाद उत्सुकता से पवन ने पूरी फाइल पलटकर देख ली। एक-एक कागज को करीने से उसमें रखा गया था। एक सूची भी अलग से बना रखी थी कि किस साल कौन-सी पॉलिसी मैच्योर हो रही हैं। इतना ही नहीं एक छोटी-सी नोटबुक में पासवर्ड भी लिखे थे। आशी को पवन बस घरेलू महिला ही मानता था। लेकिन उसका तो हर काम इतना सलीके से होता है। पवन ने पॉलिसी के रुपए जमा कर दिए। फाइल को करीने से यथास्थान रख दिया।

अब वह अपने शेल्फ को ठीक कर रहा था। जहां उसने अपने निजी कागज कचरे की तरह यहां-वहां घुसा रखे थे। *

-पूनम पांडे

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

स्त्री केंद्रित कहानियां

समाज के दमित, शोषित और वंचित वर्ग के साथ ही मुंशी प्रेमचंद ने स्वाधीनता से पहले स्त्रियों की सामाजिक दशा पर भी कई मर्मस्पर्शी कहानियां लिखी हैं। उनके द्वारा लिखी गई सोलह स्त्री केंद्रित कहानियों का संकलन हाल में पल्लव के संपादन में छपकर आया है। इन कहानियों से गुजरते हुए स्त्री जीवन की अलग-अलग छवियां प्रकट होती हैं। अपनी कहानियों में उन्होंने मुख्य तौर पर अन्याय, अनाचार और शोषण के विरुद्ध अपना स्वर बुलंद करने वाले स्त्री पात्रों को ही रचा है। फिर वो चाहे 'कुसुम' कहानी की मुख्य पात्र कुसुम हो, जो विवाह होने के बाद भी दहेज के विरोध में आक्रोश प्रकट करते हुए दांपत्य के बंधन को तोड़कर स्वतंत्र रहने के लिए तैयार हो जाती है या 'सती' कहानी की विधवा मुलिया हो, जो अपनी अस्मिता पर कुदृष्टि रखने वाले का पूरी दृढ़ता से प्रतिकार करती है। या फिर 'विध्वंस' कहानी की भुनगी, जो अपने परिश्रम का वाजिब मूल्य मांगने से नहीं झिझकती है। कह सकते हैं कि लगभग एक सदी पहले के संकीर्ण और परंपरावादी सोच से ग्रस्त भारतीय समाज में भी प्रेमचंद की कहानियां, स्त्री सशक्तिकरण की आवाज बुलंद करती हैं। *

पुस्तक: प्रेमचंद की स्त्री कथाएं,
संपादन: पल्लव, **मूल्य:** 250 रुपए,
प्रकाशक: राजपाल एंड संस, दिल्ली

विगत 5 मार्च से आरंभ हुआ गोवा का शिग्मो उत्सव, आगामी 18 मार्च तक आयोजित होगा। यह गोवा की सांस्कृतिक पहचान है। यह उत्सव स्थानीय निवासियों की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है और उन्हें अपनी परंपरा पर गर्व करने का अवसर भी देता है। इस उत्सव की कुछ प्रमुख विशेषताओं पर एक नजर।

गोवा की लोक-संस्कृति का रंगोत्सव शिग्मो

सांस्कृतिक पर्व

धीरज बसाक

भारत के पश्चिमी तट पर स्थित गोवा, अपनी समुद्र तटीय सुंदरता के कारण पर्यटकों के बीच जितना लोकप्रिय है, उतना ही अपने समृद्ध लोक संस्कृति के कारण भी यह प्रसिद्ध है। गोवा लोक संस्कृति का सबसे समृद्ध घर माना जाता है और इस समृद्ध लोक संस्कृति का सबसे जीवंत और रंगीन प्रतीक है शिग्मो फेस्टिवल या शिग्मो उत्सव। शिग्मो उत्सव केवल एक वार्षिक पर्व भर नहीं है, बल्कि गोवा के ग्रामीण जीवन, लोक परंपराओं, लोक नृत्यों और ऐतिहासिक स्मृतियों का संवेदनशील और सामूहिक उत्सव भी है।

वसंत के आगमन का उत्सव

वास्तव में शिग्मो, गोवा का पारंपरिक वसंत उत्सव है, जो होली से शुरू होकर चैत्र माह में एक पखवाड़े तक मनाया जाता है। इसलिए शिग्मो उत्सव को गोवा की लोक आत्मा का उत्सव कहते हैं। क्योंकि इसमें यहां के किसान, मजदूर और ग्रामीण समुदायों की जीवनशैली, उनकी आस्था और उनकी ऐतिहासिक चेतना पूरी भव्यता के साथ अभिव्यक्त होती है। शिग्मो का अर्थ है शिशिरोत्सव अर्थात शीत ऋतु के अंत और वसंत के आगमन का उत्सव। यह पर्व प्राचीन काल से गोवा के कुछ समुदायों द्वारा मनाया जाता रहा है। फसल कटाई के बाद जब किसान अपनी मेहनत के फल से संतुष्ट होते हैं तो प्रकृति और देवताओं के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए शिग्मो उत्सव मनाते हैं।

एक हजार साल पुराना उत्सव

इतिहासकारों के मुताबिक शिग्मो उत्सव मनाने की परंपरा कम से कम 1000 साल पुरानी है। पुर्तगाली शासन के दौरान भी गोवा के स्थानीय लोगों ने इस उत्सव को अपनी सांस्कृतिक पहचान के रूप में बनाए रखा। वास्तव में यह उत्सव गोवा के हिंदू समुदाय के लिए विशेष मायने रखता है। लेकिन इसकी लोक-रंगत और सांस्कृतिक आकर्षण के कारण आज इसमें सभी समुदायों की भागीदारी होती है।

कई लोकनृत्यों का आयोजन

शिग्मो उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें पारंपरिक लोकनृत्य और संगीत के भव्य आयोजन होते हैं। इन नृत्यों में गोवा के ग्रामीण जीवन, युद्ध कथाओं, पौराणिक प्रसंगों और सामाजिक घटनाओं को प्रस्तुत किया जाता है। शिग्मो उत्सव में शामिल प्रमुख लोक नृत्यों में घोड़े मोदनी नृत्य सबसे प्रमुख है। वास्तव में यह योद्धाओं का नृत्य होता है। माना जाता है कि प्राचीनकाल में विजयी योद्धा, घोड़ों पर सवार होकर नृत्य किया करते थे। लेकिन आज लोक कलाकार घोड़े की मुखाकृति के मुखौटे पहनकर और हाथ में तलवार लेकर नृत्य करते हैं। यह नृत्य वास्तव में गोवा के गौरवमयी इतिहास का प्रतीक है। इस उत्सव का दूसरा प्रमुख नृत्य हैं-रोमातामेल। यह सामूहिक नृत्य है, इसमें कलाकार ढोल, ताशा और झांझे की धुन पर नाचते हैं। इनके अलावा जो प्रमुख नृत्य इस उत्सव में खूब देखने को मिलते हैं, उसे फुगड़ी और जागर नृत्य कहते हैं। ये नृत्य गोवा के ग्रामीण और आदिवासी जीवन को दर्शाते हैं। इन प्रमुख नृत्यों के माध्यम से गोवा में लोग शिग्मोत्सव में सदियों से चली आ रही अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीवंत करते हैं।

निकलती हैं भव्य झांकियां

शिग्मो उत्सव के दौरान गोवा के प्रमुख शहरों जैसे पणजी, मडगांव, वास्को, पोंडा और मापुसा में भव्य शोभा यात्राएं भी निकाली जाती हैं। इन शोभा यात्राओं में रंग-बिरंगी झांकियां होती हैं, जो पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और सामाजिक विषयों को दर्शाती हैं। इन झांकियों में रामायण और महाभारत के दृश्य, गोवा के लोक देवताओं की कथाएं, पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक जागरूकता के संदेश दिए जाते हैं। यह परंपरा आधुनिक, सामाजिक चेतना का अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करती है।

ग्रामीण और शहरी शिग्मो

ग्रामीण और शहरी शिग्मो उत्सव वैसे एक-दूसरे से थोड़े भिन्न होते हैं, लेकिन ये दो रूप भले अलग हों, लेकिन उनकी आत्माएं एक होती हैं। इन दो अलग-अलग यानी शहरी और ग्रामीण शिग्मो को क्रमशः धाकटो शिग्मो यानी छोटा शिग्मो और व्हाडलो शिग्मो यानी बड़ा शिग्मो कहा जाता है। छोटा शिग्मो ग्रामीण क्षेत्रों में मनाया जाता है, जो ज्यादा पारंपरिक होता है और बड़ा शिग्मो, शहरी क्षेत्रों में आयोजित होता है और इसमें बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक झांकियां और शोभा यात्राएं निकाली जाती हैं। ग्रामीण शिग्मो में ज्यादा पारंपरिक और धार्मिक तत्व शामिल होते हैं, जबकि शहरी शिग्मो में पर्यटन और बहु-सांस्कृतियों का प्रदर्शन अधिक होता है, क्योंकि शहरी शिग्मो में बड़े पैमाने पर यहां आने वाले पर्यटक भी हिस्सा लेते हैं।

संस्कृति-संरक्षण का माध्यम

शिग्मो उत्सव केवल एक पारंपरिक लोक त्योहार भर नहीं बल्कि गोवा की सांस्कृतिक धड़कन है। शिग्मो के रंग, संगीत और नृत्य गोवा के लोगों की आत्मा को अभिव्यक्त करते हैं। इसके जरिए पीढ़ियों से चली आ रही लोक परंपराओं को संरक्षण मिलता है। यह विभिन्न समुदायों के बीच एकता और सहयोग की भावना बढ़ाता है। यह महोत्सव युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़ता है। आज के आधुनिक और वैश्विक युग में जब कई पारंपरिक उत्सव अपनी पहचान खो रहे हैं, तब शिग्मो उत्सव गोवा की सांस्कृतिक निरंतरता का पर्याय बन गया है। *

क्या आप अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारित करते हैं, लेकिन इसे प्राप्त नहीं कर पाते? ऐसे में यह जानना बहुत जरूरी है कि किन वजहों से आप अपने लक्ष्य से दूर रह जाते हैं और किन बातों का ध्यान रखकर अपने लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है, जानिए।

आप क्यों रह जाते हैं अपने लक्ष्य से दूर

सेल्फ मोटिवेशन

शिखर चंद जैन

कई लोग प्लान बनाते हैं, लक्ष्य भी तय करते हैं, लेकिन उन्हें कभी अचीव ही नहीं कर पाते। हम सभी जानते हैं कि जीवन में सफलता की पहली सीढ़ी है- लक्ष्य का निर्धारण। लक्ष्य वह मार्गदर्शक है, जो हमें भीड़ में खोने से बचाता है और चुनौतियों से लड़ने का साहस देता है। किसी भी महान कार्य की शुरुआत एक छोटे से संकल्प से ही होती है, जो आगे चलकर एक स्पष्ट लक्ष्य का रूप ले लेता है।

सोचना पर्याप्त नहीं: 'मैं यह करना चाहता हूं' ऐसा सोचकर लक्ष्य बनाना काफी नहीं है। स्पष्टता ही लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता की पहली शर्त है। जब आप गहराई से समझ लेते हैं कि आप कौन हैं, आप वास्तव में क्या चाहते हैं और आपको कहां पहुंचना है, तभी आप एक सामान्य व्यक्ति की तुलना में दस गुना अधिक व तेज उपलब्धियां हासिल कर सकते हैं। लक्ष्य केवल एक मंजिल नहीं, बल्कि वह उत्तरदायित्व है, जो हमारे समय और ऊर्जा को सही दिशा देता है।

स्वयं का करें आकलन: स्वास्थ्य, आनंद, रिश्ते और वित्तीय स्वतंत्रता, ये जीवन के चार स्तंभ हैं, जिन्हें संतुलित करके आप असाधारण सफलता पा सकते हैं। जब आप इन चार क्षेत्रों में से हर एक में खुद को 1 से 10 अंक देकर ईमानदारी से आकलन करते हैं तो आपको तुरंत समझ आने लगता है कि आपके जीवन की सबसे ज्यादा समस्याएं किस क्षेत्र से जुड़ी हैं? जाहिर है, वहीं जहां आपका स्कोर कम होता है। यानी उसी बिंदु पर सबसे अधिक फोकस करने की जरूरत होती है।

अपना दृष्टिकोण तय करें: लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में आपकी मानसिकता दो तरह की हो सकती है, समृद्धि का दृष्टिकोण या अभाव का दृष्टिकोण। समृद्धि का दृष्टिकोण आपको आत्मविश्वासी, सकारात्मक और समाधान केंद्रित बनाता है। आप दुनिया को अवसरों से भरा मानते हैं और यह विश्वास रखते हैं कि जीवन में आगे बढ़ने का अच्छा समय है। आप में यह जागरूकता बनी रहती है कि दुनिया में चुनौतियां हमेशा थीं, हैं और रहेंगी। मगर आप अपनी ऊर्जा इस बात पर केंद्रित रखते हैं कि क्या बेहतर किया जा सकता है? यह सोच आपको रचनात्मक, सक्रिय और लक्ष्य उन्मुख बनाती है। वास्तव में लक्ष्य केवल एक मंजिल नहीं, बल्कि ऐसा उत्तरदायित्व है, जो हमारे समय और ऊर्जा को सही दिशा देता है। जब इंसान की आंखों में एक स्पष्ट स्वप्न और उसे पाने का दृढ़ निश्चय होता है, तो वह साधारण से असाधारण बनने का सफर शुरू कर देता है। इसके विपरीत दूसरा दृष्टिकोण आपको सीमित कर देता है। इसमें आप किस्मत के भरोसे बैठ जाते हैं और तरह-तरह के बहाने बनाने लगते हैं। इस दृष्टिकोण से कभी कुछ हासिल नहीं हो पाता है।

लक्ष्य पर शिद्दत से टिके रहें: अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए यह जानना भी जरूरी है कि आप इन्हें क्यों हासिल करना चाहते हैं? अगर यह केवल सतही कारणों से या दूसरों की उम्मीद पर खरा उतरने के लिए है तो आप उसके प्रति गंभीर नहीं हो पाएंगे। इसकी बजाय स्पष्ट रूप से यह जानें कि इन लक्ष्यों का आपके आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक या व्यक्तिगत जीवन पर क्या असर पड़ने वाला है? इससे आपको अपने लक्ष्य पर टिके रहने का हौसला मिलेगा।

मुश्किल लक्ष्यों को आसान बनाएं: अपने लक्ष्यों को सफल बनाने के लिए उन्हें स्पष्ट और छोटे हिस्सों में विभाजित कर लें। उन्हें प्रबंधनीय और ठोस कदमों में विभाजित करें। साथ ही अपने लक्ष्यों को निर्धारित समय और प्राथमिकता दें। उन्हें अपने कैलेंडर में किसी महत्वपूर्ण बैठक की तरह रखें और तय समय पर उन्हें पूरा करने की कोशिश करें। हां, अपने संकल्पों के रास्ते में जरा लचीले भी रहें, क्योंकि जीवन में हमेशा उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। योजनाओं में आवश्यकता के अनुसार बदलाव करें। किसी गलती या असफलता पर झुंझलाने या हार मानने की बजाय खुद को माफ करें और आगे बढ़ें। अपनी प्रगति की समीक्षा भी करते रहें। *

समझ लें सटीक फॉर्मूला

आपके लक्ष्य छोटे हों या बड़े, उनमें सफलता जरूर मिलेगी अगर आप अपने लक्ष्य को निर्धारित करने और उसे पाने का सही फॉर्मूला जान लें। इसके लिए कुछ बातों को समझ लें।

- लक्ष्य की कोई डेडलाइन ना हो तो वह सिर्फ एक कल्पना या सपना मात्र बनकर रह जाता है। इसलिए हर लक्ष्य की एक समय सीमा तय करें।
- लक्ष्य और समय सीमा तय हो जाए तो वह आपका उद्देश्य बन जाता है। इसे पूरा करने की योजना बनाएं।
- लक्ष्य पाने के लिए आपको निरंतरता का भी ध्यान रखना होगा। यानी आपको नियमित रूप से अपने लक्ष्य को हासिल करने में जुटा रहना पड़ेगा।

जानकारी

अंजू जैन

आजादी के बाद, भारत में तेजी से विकसित हो रहे सरकारी औद्योगिक उपक्रमों को सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता थी, जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण थे। इसके लिए एक मजबूत सुरक्षाबल की जरूरत महसूस की गई। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए 10 मार्च 1969 को केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल यानी सीआईएसएफ (सेंट्रल इंडस्ट्रियल सिक्योरिटी फोर्स) की स्थापना की गई। भारत की संसद के एक अधिनियम द्वारा इसका गठन किया गया, जो केंद्रीय गृह मंत्रालय के अंतर्गत काम करता है। इस सुरक्षा बल का ध्येय वाक्य है-संरक्षण और सुरक्षा।

आगामी 10 मार्च को सीआईएसएफ का 57वां स्थापना दिवस मनाया जाएगा। देश की महत्वपूर्ण धरोहरों और औद्योगिक प्रतिष्ठानों की सुरक्षा में तैनात केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के योगदान और भूमिका पर एक नजर।

धरोहरों-औद्योगिक प्रतिष्ठानों का रक्षक सीआईएसएफ

प्रमुख कार्य

अपने नाम के मुताबिक ही सीआईएसएफ का प्रमुख आरंभिक कार्य औद्योगिक सुरक्षा ही था। सरकारी कारखानों, परमाणु ऊर्जा संयंत्रों और बिजली संयंत्रों की सुरक्षा का जिम्मा इस बल को दिया गया। बाद में समय-समय पर इसकी जिम्मेदारियां बढ़ती गईं। आगे चलकर यह अर्धसैन्यबल हवाई अड्डों, बंदरगाहों और मेट्रो की सुरक्षा कार्य भी करने लगा। इस बल के जवान देश की ऐतिहासिक इमारतों, स्मारकों और धरोहरों जैसे-लाल किला, ताजमहल आदि की रक्षा भी करते हैं। वीआईपी सुरक्षा के तहत विशिष्ट व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करना भी इनकी जिम्मेदारी में शामिल है।

बढ़ता संख्या बल

जब 1969 में सीआईएसएफ की शुरुआत हुई थी, तब इसमें सिर्फ 2,800 जवान थे। आज यह दुनिया के सबसे बड़े सुरक्षा बलों में से एक है, जिसमें 2,00,000 (दो लाख) से भी ज्यादा जवान शामिल हैं।

आग बुझाने में भी माहिर

सीआईएसएफ के पास अपना एक खास 'फायर विंग' भी है। यह भारत का अकेला ऐसा सुरक्षा बल है, जिसके पास फैक्ट्रियों और उद्योगों में आग बुझाने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित टीम होती है।

स्मार्ट डॉग स्क्वाड

सीआईएसएफ के पास बहुत ही स्मार्ट डॉग्स की तेजतर्रार स्क्वाड भी है। इनके डॉग्स इतने ट्रेंड होते हैं कि वे छिपी हुई खतरनाक चीजों का पलक झपकते ही पता लगा लेते हैं। कई बार सीआईएसएफ के डॉग स्क्वॉड ने शातिर किस्म की साजिशों का भंडाफोड़ किया है।

एयरपोर्ट सुरक्षा में संलग्न

देश के तमाम एयरपोर्ट्स पर केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल को उनकी विशिष्ट विशेषज्ञता, उन्नत तकनीक के कारण तैनात किया गया है। वे हवाई अड्डे की सुरक्षा के विशेषज्ञ माने जाते हैं, जो यात्रियों की तलाशी, सामान की स्क्रीनिंग और आतंकवाद विरोधी अभियानों में उच्च दक्षता प्रदान करते हैं। इन सैनिकों को विशेष रूप से नागरिक हवाई अड्डों की सुरक्षा के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, जो सामान्य पुलिस या दूसरे अर्धसैनिक बलों के प्रशिक्षण से अलग होती है। सन् 1999 में इंडियन एयरलाइंस की फ्लाइट आईसी-814 के अपहरण के बाद, भारत सरकार ने सुरक्षा मजबूत करने के लिए हवाई अड्डों की सुरक्षा सीआईएसएफ को सौंपने का निर्णय लिया। इसकी शुरुआत फरवरी 2000 में जयपुर हवाई अड्डे से की गई। ये अर्धसैनिक, आधुनिक उपकरणों का उपयोग करके यात्रियों की गहन तलाशी और हैंड बैगेज की जांच सुनिश्चित करते हैं, जो एयरपोर्ट सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। ये अंतरराष्ट्रीय विमानन सुरक्षा मानदंडों का पालन करते हैं, जो अन्य सुरक्षा बलों की तुलना में अधिक उपयुक्त हैं। साथ ही इस बल के जवान संभावित खतरों के लिए 24X7 निगरानी करते हैं और त्वरित प्रतिक्रिया टीम के साथ किसी भी आपात स्थिति से निपटने में सक्षम होते हैं। ये एयरपोर्ट के संवेदनशील क्षेत्रों में असामाजिक तत्वों को पकड़ने और किसी भी प्रकार की तस्करी को रोकने में भी माहिर होते हैं। वर्तमान में 70 से अधिक एयरपोर्ट्स पर सीआईएसएफ के जवानों की तैनाती है। यद्यपि अब देश के लगभग 60 हवाई अड्डों पर गैर-प्रमुख ड्यूटी के लिए निजी सुरक्षा गार्ड्स भी लगाए जा रहे हैं, लेकिन प्रमुख सुरक्षा और स्क्रीनिंग का काम अभी भी मुख्य रूप से सीआईएसएफ ही करती है। *

महिलाएं भी नहीं हैं पीछे

देश के अन्य सुरक्षा बलों पुलिस, पीएसी, बीएसएफ और सशस्त्र सैन्य (थल सेना, वायु सेना और नौसेना) बलों की तरह ही सीआईएसएफ में भी महिलाएं अपनी सेवाएं दे रही हैं। वर्तमान में इस अर्धसैन्य बल में लगभग साढ़े बारह हजार यानी आठ प्रतिशत महिलाएं तैनात हैं। सरकार का लक्ष्य जल्द ही इनकी संख्या बढ़ाकर दस प्रतिशत करने का है। मुख्य तौर पर महिलाएं एविएशन सुरक्षा, क्विक रिएक्शन टीम और सीआईएसएफ कमांडो टीम में शामिल होकर अपनी सेवाएं दे रही हैं। किसी भी अन्य सेंट्रल आर्म्ड पुलिस फोर्सेस की तुलना में सीआईएसएफ में सबसे अधिक महिलाएं कार्यरत हैं।

स्त्रियों के संघर्ष और उसके सशक्तिकरण को शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों का विषय बनाया जाता रहा है। आज महिला दिवस के अवसर पर हम आपको कुछ ऐसी फिल्मों के बारे में बता रहे हैं, जिनमें स्त्री संघर्ष और उसके सशक्तिकरण को प्रमुखता से उभारा गया है।

फिल्मों में खूब दिखीं महिला संघर्ष-शक्ति की कहानियां

सिने ट्रेंड

अशोक जोशी

हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा में स्त्रियों का उल्लेखनीय योगदान रहा। जिन दिनों सिनेमा की शुरुआत हो रही थी, उसमें महिलाओं का काम करना अघोषित रूप से प्रतिबंधित माना जाता था। तब पुरुष कलाकार ही नारी का स्वांग भर पर्दे पर नजर आया करते थे। लेकिन कुछ समय बाद पर्दे पर नायिकाओं के पर्दापण से अब तक स्त्री कलाकार, सिनेमा का सबसे अनिवार्य हिस्सा बन गई हैं। फिल्मों में समय-समय पर नारी जीवन से जुड़ी समस्याएं, संघर्ष और उनके सशक्तिकरण जैसे विषयों को गंभीरता से प्रदर्शित किया जाता रहा है।

बेमेल विवाह की समस्या: हिंदी सिनेमा में वी. शांताराम, नारी समस्याओं को पर्दे पर सशक्त तरीके से उठाने वाले फिल्मकार थे। उनकी 1937 में प्रदर्शित फिल्म 'दुनिया न माने' बेमेल विवाह की समस्या पर केंद्रित थी। यह फिल्म स्त्रीत्व की गरिमा को बेहद खूबसूरती से उभारती है। शांता आप्टे ने नायिका नीरा की भूमिका में प्राण फूंक दिए थे। नारी को भोग्या, चरणों की दासी और वस्तु मानने वालों को यह फिल्म प्रभावी सबक सिखाती है।

जातिगत विसंगतियों पर कटाक्ष: 1936 में प्रदर्शित फिल्म 'अछूत कन्या' सवर्ण लड़के और अछूत लड़की की एक दारुण प्रेम कहानी है। यह एक दुःखांत फिल्म है। इस वर्जित और उपेक्षित विषय को पहली बार फिल्म के माध्यम से लोगों के बीच लाने का साहसिक प्रयास किया गया था। इससे मिलते-जुलते विषय पर 1959 में विमल राय ने 'सुजाता' बनाई, जो फिर से अछूत युवती और सवर्ण युवक के प्रेम की कहानी है। विमल राय की यह फिल्म आजादी के बाद इस विषय पर बनाई गई पहली फिल्म थी। इस फिल्म के एक दृश्य में रवींद्रनाथ ठाकुर कृत नाटक 'चांडालिका' का मंचन किया जाता है। इस नाटक में भगवान बुद्ध अछूत स्त्री के हाथों से पानी पीते हैं और सभी जातियों की समानता को व्याख्यायित करते है। राजकपूर और मीना कुमारी की ख्वाजा अब्बास निर्देशित फिल्म 'चार दिल चार राहें' की कहानी भी ऐसे ही विषय के इर्द-गिर्द घूमती है। इसी क्रम में श्याम बेनेगल की फिल्में 'अंकुर', 'भुवन शोम', 'मृगया', 'भूमिका', 'मंडी', 'चक्र' आदि में हाशिए पर धकेल दी गई स्त्रियों की सामाजिक स्थिति की दर्दमय झांकी प्रस्तुत की गई हैं।

दिखे स्त्री संघर्ष के विविध रूप: हिंदी फिल्मकारों ने भारतीय स्त्री के सभी रूपों को अपनी फिल्मों में प्रस्तुत किया है। घरेलू स्त्री, कामकाजी स्त्री, किसान स्त्री, विवाहित और अविवाहित स्त्री, जुझारू स्त्री, संघर्षशील स्त्री और अन्याय, अत्याचार से लड़ने वाली स्त्री के कई रूप हिंदी फिल्मों में नजर आते रहे हैं। महबूब खान द्वारा निर्देशित फिल्म 'औरत' और उसका संशोधित संस्करण 'मदर इंडिया' भारतीय नारी के संघर्ष और त्रासदी की महागाथा है, जिसमें ग्रामीण महाजनी सभ्यता की क्रूरता और अत्याचार से लड़ती हुई नारी की मार्मिक कहानी है। ग्रामीण सामंती अत्याचार से उत्पन्न डाकू समस्या को उजागर करने वाली फिल्मों में नारी की विवशता को 'मुझे जीने दो', 'गंगा जमुना', 'जिस देश में गंगा बहती है' और शेखर कपूर की 'बैंडिट क्वीन' में प्रभावी ढंग से पर्दे पर उतारा गया है।

राजकुमार संतोषी की फिल्म 'लज्जा' में समाज के अलग-अलग परिवेशों से आने वाली तीन स्त्री पात्रों के दारुण शोषण और मुक्ति के संघर्ष को दर्शाया गया है। इनकी ही फिल्म 'दामिनी' में बलात्कार से पीड़ित घर की एक नौकरानी को न्याय दिलाने की कहानी को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया गया है।

आर.के. बैनर की फिल्मों में स्त्री: राजकपूर द्वारा निर्मित-निर्देशित फिल्मों में भी स्त्री जीवन और संघर्ष के विविध रूप सामने आते हैं। 'सत्यम शिवम सुंदरम', 'राम तेरी गंगा मैली' जैसी फिल्मों में जहां नारी के संघर्ष की अलग-अलग दास्तानें दिखती हैं, वहीं 'प्रेमरोग' में आभिजात्य परिवार की विधवा युवती का विवाह सामान्य वर्ग के युवक से करवाकर सामाजिक विषमता को मिटाने की पहल की गई।

बी.आर. चोपड़ा की फिल्मों में स्त्री संघर्ष: फिल्मों में नारी की स्थिति का चित्रण करने में बी. आर. चोपड़ा का भी उल्लेखनीय योगदान रहा है। 1956 में उन्होंने फिल्म 'एक ही रास्ता' में विधवा विवाह करवाकर सामाजिक सुधार का संदेश दिया। 'साधना' (1958) समाज में वेश्याओं की स्थिति और उसके प्रति सामाजिक नजरिए पर प्रकाश डालने में सफल रही। साल 1959 में उन्होंने अविवाहित मातृत्व की समस्या से जूझने वाली स्त्रियों के जीवन के बिखराव और उसकी परिणति को दर्शाने वाली सशक्त फिल्म 'धूल का फूल' का निर्माण किया। 'इंसाफ का तराजू' (1980) में बलात्कार से पीड़ित लड़की की कहानी को साहसिक रूप से प्रस्तुत किया। 1982 में फिल्म 'निकाह' में उन्होंने तलाक और हलाला जैसे विषयों को छूने का प्रयास किया।

नारी संघर्ष की दास्तान सुनाती कुछ और फिल्में: बॉलीवुड में स्त्रियों के संघर्ष और नारी सशक्तिकरण पर तमाम बेहतरीन फिल्में बनी हैं। 'खून भरी मांग', 'मृत्युदंड', 'वारिस', 'थप्पड़', 'कहानी', 'लापता लेडीज', 'गंगूबाई काठियावाड़ी', 'नीरजा', 'क्वीन', 'गुलाब गैंग', 'इंग्लिश-विंग्लिश', 'पिंक', 'दंगल', 'छपाक', 'मर्दानी', 'गुंजन सक्सेना' जैसी कितनी ही फिल्में हैं, जो स्त्री संघर्ष, स्त्री सशक्तिकरण सहित स्त्री जीवन के विविध पहलुओं को छूती हैं। *